पटना ●गुरुवार, 01 अगस्त 2024 मूल्यः 5:00, पृष्ठः 8 वर्षः 5, अंकः201 www. bordernewsmirror@gmail.com ☎ 9471060219, 9470050309

BORDER NEWS MIRROR
BNM
to the point...
राष्ट्रीय द्विभाषिक समाचार पत्र
RNI N.- BIHBIL/2022/88070

# बॉर्डर न्यूज मिरर

"खबरों से समझौता नहीं"

विज़न फॉर विकसित भारत पर... 3 www. bordernewsmirror.com ब्लैक साड़ी में बला की... 8

# एक ही दिन में हिजबुल्ला और हमास कमांडर ढेर

**इजरायल के बदले ने दुनिया भर में मचा दिया हड़कंप**

**तेल अवीव (एजेंसी)।** इजरायल की ख्याति अपने दुश्मनों से चुनकर बदला लेने वाले मुल्क के तौर पर रही है। बीते साल 7 अक्टूबर को हमास ने उस पर ऐसा हमला बोला था कि 1200 लोग मारे गए थे। इसके अलावा 250 लोग अगवा कर लिए गए थे। बीते कई दशकों के इतिहास में इजरायल पर यह सबसे भीषण हमला था। इसके बाद से माना जा रहा था कि हमास से जंग में इजरायल पहले जैसा ताकतवर नहीं रहा। लेकिन मंगलवार को इजरायल ने जो किया, उससे फिलिस्तीन समेत उसके समर्थक देशों में हड़कंप मच गया है। उसने एक तरफ हमास के सुप्रीम नेता इस्माइल हानियेह को ईरान के अंदर घुसकर मार डाला तो वहीं हिजबुल्लाह के टॉप कमांडर फवाद शुक्र को लेबनान के बेरूत में मार गिराया। इजरायल ने दावा किया है कि फवाद शुक्र ही गोलान हाइट्स में हुए आतंकी हमले का मास्टरमाइंड था, जिसमें फुटबॉल ग्राउंड में खेल रहे 12 मासूम बच्चों की मौत हो गई थी। इजरायल का कहना है कि बेरूत में एयरस्ट्राइक के दौरान उसे मार गिराया गया। वहीं हिजबुल्लाह का कहना है कि अभी पता नहीं है कि फवाद शुक्र कहां है और उसकी क्या स्थिति है।

# भारत के खिलाफ 'खतरनाक' प्लान बना रहा आईएस

**● इस्लामिक स्टेट को लेकर यूएन की रिपोर्ट में बड़ा खुलासा**

**जिनेवा (एजेंसी)।** संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आतंकवादी समूह इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड द लेवंत-खोरासान भारत में बड़े पैमाने पर हमले न कर पाने के बावजूद इस देश में स्थित अपने आकाओं के माध्यम से ऐसे लड़ाकों की भर्ती करना चाहता है जो अकेले ही हमलों को अंजाम दे सकें। आईएसआईएल, अल-कायदा और उससे जुड़े व्यक्तियों और संस्थाओं के बारे में विश्लेषणात्मक सहायता और प्रतिबंध निगरानी टीम की 34वीं रिपोर्ट मंगलवार को यहां जारी की गई।

# पूजा खेड़कर का खेल खत्म! रद्द हुआ सेलेक्शन

**● भविष्य में नहीं दे पाएंगी कोई भी एग्जाम,यूपीएससी का बड़ा ऐक्शन**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** संघ लोक सेवा आयोग ने बुधवार को पूजा खेडकर की उम्मीदवारी रद्द कर दी। उन पर धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोप थे। यूपीएससी ने पाया कि पूजा खेडकर ने नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिए, उन्हें भविष्य की सभी परीक्षाओं और चयनों से रोक दिया गया है। सरकार ने एक बयान में कहा, यूपीएससी ने उपलब्ध रिकॉर्ड की सावधानीपूर्वक जांच की है और पाया है कि वह यूपीएससी-2022 नियमों के प्रावधानों के विपरीत काम करने की दोषी हैं। यूपीएससी-2022 के लिए उनकी अनंतिम उम्मीदवारी रद्द कर दी गई है और उन्हें यूपीएससी की भविष्य की सभी परीक्षाओं /चयनों से स्थायी रूप से वंचित कर दिया गया है। यूपीएससी ने यह भी कहा कि केवल खेडकर के मामले में ही वह उनके प्रयासों की संख्या का पता नहीं लगा सका। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने न केवल अपना नाम बदला बल्कि अपने माता-पिता का नाम भी बदल दिया। यूपीएससी ने पुष्टि की कि वह यह सुनिश्चित करने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को और मजबूत करने की प्रक्रिया में है कि भविष्य में ऐसा मामला दोबारा न हो। बयान में आगे कहा गया है कि पूजा मनोरमा दिलीप खेडकर के मामले की पृष्ठभूमि में यूपीएससी ने वर्ष 2009 से 2023 तक यानी 15 सालों से यूपीएससी के 15,000 से अधिक अंतिम रूप से रेकमेंडेड कैंडिडेट के उपलब्ध आंकड़ों की पूरी तरह से जांच की है।

# 'आई' एम सॉरी, अधिकारी दिवालिया हो गए हैं

**● दिल्ली हाईकोर्ट ने कोचिंग हादसे पर एमसीडी को लगाई कड़ी फटकार**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली के ओल्ड राजेंद्र नगर आईएएस कोचिंग हादसे की उच्चस्तरीय जांच करवाने की मांग वाली याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट में बुधवार को सुनवाई हुई। इस दौरान दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली नगर निगम को कड़ी फटकार लगाई। कोर्ट ने सवाल किया कि उपनियमों के उदारीकरण के बावजूद, सदियों पुराने बुनियादी ढांचे को सही क्यों नहीं किया गया। दिल्ली हाई कोर्ट ने आगे सवाल किया कि बेसमेंट में पानी कैसे घुस

गया। इस बात पर जोर देते हुए कि बुनियादी ढांचे को पर्याप्त रूप से सहीं क्यों नहीं किया गया था। कोर्ट ने सिविक अधिकारियों को लताड़ लगाते हुए कहा कि मुझे यह कहते हुए खेद है कि सिविक अधिकारी दिवालिया हो चुके हैं, बुनियादी ढांचे के मुद्दों और सुरक्षा चिंताओं को संबोधित करने में प्रभावी कार्रवाई और जिम्मेदारी की गंभीर कमी को उजागर किया।

**'इमारतों को मंजूरी दे रहे हैं, लेकिन ढंग के नाले नहीं हैं'**

दिल्ली हाई कोर्ट ने प्राधिकारियों को फटकार लगाते हुए कहा कि आप बहुमंजिला इमारतों को मंजूरी दे रहे हैं, लेकिन ढंग के नाले नहीं हैं। आप मुफ्त की सौगातें बांटने की संस्कृति चाहते हैं, कर नहीं वसूलना चाहते; इसलिए ऐसा तो होना ही है। हाई कोर्ट ने प्राधिकारियों पर तंज करते हुए कहा कि उन्हें बुनियादी ढांचे का निर्माण करने की जरूरत है, लेकिन वे दिवालिया हो गए हैं और वेतन भी नहीं दे पा रहे हैं। अजीब जांच चल रही है, पुलिस पास से गुजरने वाले कार चालक के खिलाफ कार्रवाई कर रही है, लेकिन एमसीडी अधिकारियों के खिलाफ नहीं।

# बारिश ने किया बेहाल, अब जीना हुआ मुहाल

**● पानी-पानी हुआ आधा भारत,एमपी-यूपी व केरल में जबरदस्त बारिश ● झारखंड में बिजली गिरने से 10 की मौत,एमपी में कोहराम**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** देश के मध्य, पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों में मानसून जमकर सक्रिय है। भारतीय मौसम विभाग ने बुधवार को 24 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। इस बीच, झारखंड में बिजली गिरने से मंगलवार को 10 लोगों की मौत हो गई। इधर, मध्य प्रदेश में मानसून की एंट्री के 38 दिन में ही सीजन की आधी यानी 50 फीसदी बारिश हो गई है।

प्रदेश में एक और स्ट्रॉन्ग सिस्टम ऐक्टिव हो रहा है। बुधवार से फिर से प्रदेश में झमाझम का दौर शुरू हो सकता है। वहीं, राजस्थान और बिहार में मानसून धीमा पड़ा है। राजस्थान के जैसलमेर और गंगानगर में टेम्परेचर 40 डिग्री चला गया। बिहार में भी ट्रफ लाइन राज्य की सीमा से बाहर है, जिसके चलते बारिश नहीं हो रही है। कई जिलों में गर्मी और उमस है। गोपालगंज में तापमान 40 डिग्री पहुंच गया। राजस्थान में बारिश का दौर धीमा पड़ने के साथ ही उमस

बढ़ गई है। अगले दो-चार दिन इसी तरह का मौसम बने रहने की संभावना है।

मौसम विशेषज्ञों के अनुसार आज राज्य के आठ जिलों में बारिश का अलर्ट है। मौसम विज्ञान केन्द्र से जारी रिपोर्ट देखें तो राजस्थान में मानसून सीजन में अब तक 210.7 एमएम बरसात हो चुकी है। जबकि इस सीजन में अब तक (1 जून से 30 जुलाई तक) 211.7 एमएम बरसात होती है। पिछले 24 घंटे के दौरान सबसे ज्यादा बरसात 80 एमएम करौली में दर्ज हुई। मध्यप्रदेश में बुधवार से अगले 4 दिन तक बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम ऐक्टिव रहेगा। बुधवार को जबलपुर, रीवा, सागर और शहडोल संभाग के 22 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है। पश्चिमी हिस्से- भोपाल, इंदौर,

उज्जैन, नर्मदापुरम, ग्वालियर-चंबल में कहीं हल्की, तो कहीं तेज बारिश होगी। छत्तीसगढ़ में अगले 3 घंटे बिलासपुर और सरगुजा संभाग के जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। सुबह 7 से 10 बजे तक बिलासपुर, गौरेला-पेंड्रा- मरवाही, जांजगीर-चांपा, जशपुर, कबीरधाम, कोरबा, कोरिया, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, मुंगेली, रायगढ़, सक्ती, सारंगढ़-बिलाईगढ़, सूरजपुर, सरगुजा, बलरामपुर और बलौदा बाजार जिले के एक दो स्थानों पर गरज चमक के साथ मध्यम बारिश होने की संभावना है। यूपी में मानसून फिर से सक्रिय हो रहा है। मंगलवार को 17 जिलों में हल्की बारिश हुई। इससे लोगों को गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। बुधवार को पूर्वी और पश्चिमी यूपी के 16 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है, जबकि 58 जिलों में गरज-चमक के साथ हल्की बरसात हो सकती है। बिजली भी गिरने का भी खतरा है।

# एक हफ्ते पहले किया था अलर्ट राज्य सरकार ने ध्यान नहीं दिया

**केरल हादसे को लेकर अमित शाह ने राज्यसभा में विपक्ष को घेरा**

**● वायनाड में लैंडस्लाइड से अब तक 184 की मौत, 170 लापता**

**वायनाड (एजेंसी)।** केरल के वायनाड में तेज बारिश के बाद लैंडस्लाइड में मरने वालों की संख्या 184 हो गई हैं। 131 लोग अस्पताल में हैं, जबकि 170 के लापता होने की रिपोर्ट लिखाई गई है। लैंडस्लाइड सोमवार देर रात 2 बजे और 4 बजे के करीब मुंडक्कई, चूरलमाला, अट्टामाला और नूलपुझा गांवों में हुई थीं। इनमें घर, पुल, सड़कें और गाड़ियां बह गईं। आर्मी, एयरफोर्स, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, पुलिस और डॉग स्क्वॉड की टीमें

रेस्क्यू में जुटी हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को संसद में बताया- 23-24 जुलाई को ही केरल सरकार को अलर्ट किया गया था। सरकार समय रहते लोगों को हटाती तो इतना नुकसान नहीं होता। गृह मंत्री ने दावा किया कि पिनाराई विजयन के नेतृत्व वाली केरल सरकार को वायनाड में भूस्खलन आने से एक सप्ताह पहले ही केंद्र द्वारा चेतावनी दी गई थी।

# देश की सेवा में लगा संघ, आलोचना संविधान के खिलाफ

**● राज्यसभा में बोले उपराष्ट्रपति धनखड़, विपक्ष को दी नसीहत**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को आरएसएस पर टिप्पणी करने पर कड़ी आपत्ति जताई। राज्यसभा की कार्यवाही के

दौरान उन्होंने कहा कि यह राष्ट्र की सेवा में लगा संगठन है और संगठन से जुड़े लोग निस्वार्थ भाव से काम करते हैं। उन्होंने कहा कि देश के काम में लगे संगठन की आलोचना करना संविधान के खिलाफ है और उसे देश की विकास यात्रा का हिस्सा बनने का अधिकार है। इस पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने उन्हें टोकने की कोशिश भी की। इस हंगामे के बाद बसपा और बीजद सहित विपक्षी दलों ने सदन से वॉकआउट कर दिया।

# पतंजलि के विज्ञापन पर एससी ने फिर दिखाए तेवर

**● आयुष मंत्रालय को दिया सख्त आदेश,केंद्र को भी नहीं छोड़ा**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दवाओं के भ्रामक विज्ञापन पर सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कड़ा रूख अपनाया। शीर्ष अदालत ने इसे गंभीरता से लेते हुए कहा कि केंद्रीय आयुष मंत्रालय को भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ लोगों को जागरुक करने के लिए अपनी वेबसाइट पर एक डैशबोर्ड बनाना चाहिए। जस्टिस हिमा कोहली और संदीप मेहता की पीठ ने यह भी कहा कि विज्ञापनों को मीडिया में जारी करने से पहले उसकी उचित स्वीकृति अनिवार्य की जानी चाहिए। पीठ ने पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड के भ्रामक विज्ञापन से जुड़े मामले की सुनवाई के दौरान यह निर्देश दिया। पीठ ने भारतीय चिकित्सा संघ (आईएमए) की ओर से दाखिल याचिका में आरोप लगाया कि पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड द्वारा कोविड टीकाकरण अभियान और आधुनिक चिकित्सा पद्धति को बदनाम करने के लिए अभियान चलाया था।

# उम्मीद थी लोकसभा चुनाव के नतीजों से सबक लेगी बीजेपी

**सोनिया गांधी ने मोदी सरकार को सुनाई खरी खोटी,जमकर घेरा**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने बुधवार को केंद्रीय बजट, मणिपुर हिंसा, जाति जनगणना और जम्मू-कश्मीर में हाल ही में हुए हमलों सहित अलग अलग मुद्दों पर केंद्र सरकार को घेरे में लिया है। सोनिया गांधी ने कांग्रेस की एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी सरकार भ्रम में है और लोकसभा चुनाव में अपने खराब प्रदर्शन के बाद भी उससे सबक नहीं लिया। इस मौके पर सोनिया गांधी ने वायनाड में हुए भूस्खलन में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है। सोनिया गांधी ने देश में बढ़ते रेल हादसों पर कहा कि

यह कुप्रबंधन का नतीजा है और बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। केंद्रीय बजट 2024 पर सोनिया गांधी ने सरकार पर किसानों और युवाओं की मांगों की अनदेखी करने का आरोप लगाया है। सोनिया ने कहा,किसानों और युवाओं की मांगों को पूरी तरह से नजरअंदाज किया गया है। बजट की उपलब्धियों पर प्रधानमंत्री ने बड़ी बड़ी बाते की, लेकिन फिर भी निराशा ही हुई है। उन्होंने कहा,केंद्र सरकार, और खासकर सरकार के बड़े नेता भ्रम में है। देश भर में करोड़ों परिवार बढ़ती बेरोजगारी और महंगाई से त्रस्त हैं। सोनिया गांधी ने जनगणना ना कराने के लिए सरकार की आलोचना की है जो 2021 में ही होनी थी। उन्होंने कहा कि इससे जनसंख्या, खासकर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का के बारे में पता नहीं चल पाएगा।

# हमास चीफ की हत्या के बाद ईरान में आपात बैठक

**● इजरायल के खिलाफ पास किया प्रस्ताव, जंग का ऐलान**

**तेहरान (एजेंसी)।** हानिया की मौत के बाद क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है। ईरान, हमास और हूतियों की ओर से इस पर सख्त प्रतिक्रिया आई है। वहीं अमेरिका ने भी इजरायल पर

हमले की स्थिति में जंग में कूदने का ऐलान कर दिया है। ईरान में हानिया की मौत के बाद की स्थिति पर चर्चा के लिए आपातकालीन राष्ट्रीय सुरक्षा बैठक बुलाई गई है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने दो ईरानी अधिकारियों के हवाले से बताया है कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खुमैनी के आवास पर आनन-फानन में सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की एक आपातकालीन बैठक बुलाई है। ईरान असाधारण परिस्थितियां पैदा होने पर ही इस तरह की बैठक होती है। इसमें इजरायल के खिलाफ प्रस्ताव पास हुआ।

**जाति जनगणना विवाद**

# अनुराग के बचाव में खुलकर आई बीजेपी

**राहुल गांधी से पूछा-आप साधु हैं या ज्ञानी, हंगामा जारी**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** लोकसभा में बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर के जाति वाले बयान पर हंगामा जारी है। कांग्रेस सांसदों ने सदन के बाहर विरोध प्रदर्शन किया है। कांग्रेस का कहना है कि बीजेपी सांसद ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का अपमान किया है। कांग्रेस के प्रदर्शन पर कर्नाटक के पूर्व सीएम और भाजपा सांसद बसवराज बोम्मई ने कहा कि यह हैरानी के बाद है कि जातिगत जनगणना कराने की बात कहने वाले लोग जाति पूछे जाने से आहत हो रहे हैं। विपक्षी नेता अनुराग ठाकुर के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। बीजेपी की ओर से सांसद संबित पात्रा ने एक प्रेस कान्फ्रेंस कर कांग्रेस पर निशाना साधा और कहा कि संसद में '99 की संख्या और अंधकार का खेल' चल रहा है। संबित पात्रा ने कहा, अनुराग ठाकुर ने अपने भाषण में किसी का भी नाम नहीं लिया।

## संक्षिप्त समाचार

### कर्ज चुकाने से बचने के लिए रची थी खुद के अपहरण की साजिश, गिरफ्तार

**दानापुर, एजेंसी।** लाखों का कर्ज चुकाने से बचने के लिए एक व्यक्ति ने खुद के अपहरण की कहानी रच डाली. पत्नी को व्हाट्सएप पर मैसेज भेजकर अगवा होने की सूचना दी और फिरौती के लिए बीस लाख रुपये की मांग की. लेकिन रूपसपुर पुलिस ने उसके प्लान पर पानी फेर दिया. अपहरण की सूचना मिलते ही पुलिस अमित रंजन के मोबाइल लोकेशन के आधार पर तलाश शुरू की. इस पर अमित ने खुद को रूपसपुर पुलिस के सुपुर्द कर दिया. पुलिस के मुताबिक पूछताछ में पता चला कि कर्ज के बोझ के चलते अमित ने अपने ही अपहरण का नाटक रचा था. एएसपी दीक्षा ने बताया कि बरबीघा शेरपुर बरबीघा मूल निवासी व वर्तमान में रूपसपुर के गोला रोड लव कुश नगर में किरायेदार अमित रंजन की पत्नी मनीषा कुमारी ने 26 जुलाई को स्थानीय थाने में लिखित शिकायत की थी की मेरे पति अमित रंजन को अगवा कर लिया गया है और बीस लाख फिरौती मांगी जा रही है. दर्ज प्राथमिकी में मनीषा कुमारी ने बताया कि 25 जुलाई की सुबह 7 बजे घर से बोलकर निकाले थे कि खगड़िया एक व्यक्ति से मिलने जा रहे हैं. 26 जुलाई की सुबह व्हाट्सएप पर मैसेज आया था कि सिमरी-बख्तियापुर से मेरा अपहरण हो गया. बीस लाख रुपये इंतजाम करने को कहा. पुलिस को सूचना देने पर पति को जान से मारने की धमकी दी गयी थी. एएसपी ने बताया कि थानाध्यक्ष रणविजय कुमार के नेतृत्व टीम गठित ने छापेमारी कर अनुसंधान किया तो पता चला कि बहुत लोगों से कर्ज लिये हुए है और ऑनलाइन गेम खेलने में लगाता है. पुलिस अनुसंधान कर रही थी कि सोमवार को शाम में अमित रंजन ने खुद को रूपसपुर थाना पहुंच कर कहा कि हम सुरक्षित हैं. उन्होंने बताया कि पुलिस ने अमित से पूछताछ किया गया तो पुलिस के समक्ष स्वीकार किया कर्ज चुकाने में असमर्थ थे. जिसको लेकर अगवा की साजिश रची. एएसपी ने बताया कि अमित को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा जायेगा.

### अब मोबाइल से क्यूआर कोड से मरीज जानेंगे अस्पतालों में दवाई की उपलब्धता

**पटना, एजेंसी।** राज्य के सरकारी अस्पतालों में आवश्यक दवाओं की उपलब्धता की जानकारी अब मरीज अपने मोबाइल से विश्व स्वास्थ्य संस्थान स्तर पर क्यूआर कोड को स्कैन कर जान सकेंगे. ऐसे में किसी भी जरूरी दवाई की सरकारी अस्पताल में उपलब्धता की जानकारी के लिए मरीजों को परेशान नहीं होना होगा. साथ ही उन्हें रियल टाइम में जानकारी के आधार पर दवाई मिल सकेगी. यह नई व्यवस्था लागू करने का निर्णय राज्य सरकार ने लिया है. साथ ही सी-डैक नोएडा को ई-औषधि पोर्टल अपग्रेड करने के लिए पत्र लिखा गया है.

### सड़क से सदन तक भाजपा आरक्षण के साथ : दिलीप

**पटना, एजेंसी।** भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कहा कि भाजपा शुरू से आरक्षण की पक्षधर रही है और इस मुद्दे पर सड़क से सदन तक राज्य सरकार का साथ देगी. 2025 विधानसभा चुनाव को लेकर क्या तैयारी है –भाजपा संगठन की पार्टी है. संगठन के समर्पित, अनुभवी व जुझारू कार्यकर्ताओं की फौज की सकारात्मक ऊर्जा का उपयोग करते हुए पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूत बनाने पर फोकस करेंगे. पुराने कार्यकर्ताओं को सम्मान देते हुए नये कार्यकर्ताओं को भी जोड़ने का काम किया जायेगा. त्त चुनाव में एनडीए दलों के साथ सीट बंटवारे का फॉर्मूला क्या होगा – सीटों के तालमेल पर निर्णय केंद्रीय स्तर पर होगा. एनडीए के सभी दल एक-एक सीट पर जीत की तैयारी से उतरेंगे. चुनाव से लगभग एक साल पहले कंबाइंड तैयारी शुरू हो जायेगी. इसके लिए नवंबर 2024 में राज्य स्तर पर एनडीए का संयुक्त कंट्रोल रूम स्थापित कर दिया जायेगा. एनडीए दलों की संयुक्त कमेटी इसका संचालन करेगी. त्त विपक्ष के हमलों का जवाब कैसे देंगे – कुछ दल जाति की राजनीति कर रहे हैं. समाज को बांट कर और भेदभाव करने से ही उनकी राजनीतिक दुकानदारी चलती है. वहीं, भाजपा सबका साथ, सबका विकास और जमात की राजनीति करती है. एसटी, एससी व पिछड़ा समाज को मुख्यधारा से जोड़ना हमारी प्राथमिकता होगी. त्तनौकरियों और आरक्षण के मुद्दे पर क्या जवाब होगा – नियोजित शिक्षकों से लेकर वर्तमान शिक्षकों की बहाली नीतीश सरकार की सोच थी. कोई चलती नाव पर बैठ जाये और उसको अपना कहना लगे तो इससे अधिक हास्यास्पद क्या होगा नेता प्रतिपक्ष से एक ही सवाल पूछना चाहता हूं कि अगर वे लालू के पुत्र नहीं होते और विरासत में राजनीति नहीं मिलती तो मिली शिक्षा के आधार पर उनको कौन सा रोजगार मिल जाता विपक्ष के किसी भी अनर्गल और अशिष्ट बयानों का जवाब भाजपा कार्यकर्ता मर्यादित भाषा में ही देंगे।

# बिहार की ट्रेनों में बढ़ी चोरी, पटना जंक्शन पर झपटमार का आतंक

**पटना, एजेंसी।** बिहार में ट्रेन के अंदर और प्लेटफॉर्मों पर चोर गिरोह के सदस्य सक्रिय रहते हैं. इन दिनों रेल यात्री इन चोरों के शिकार बन रहे हैं. आए दिन ऐसी घटना सामने आती है जिसमें एसी बोगी तक के अंदर से यात्रियों के सामानों की चोरी हो रही है. किसी यात्री का गहना चोरी किया गया तो किसी का ट्रॉली बैग लेकर चोर फरार हो गए. पटना जंक्शन पर झपटमारी का ताजा मामला भी सामने आया है. एक महिला के गले से सोने की चेन झपट्टा मार कर बदमाश भाग गए.

वाराणसी के महुआडीह की रहने वाली प्रभा देवी का बैग फरक्का एक्सप्रेस में बदमाशों ने पटना जंक्शन के आसपास चोरी कर लिया. उस बैग में उनके लाखों की कीमत की सोने की चेन, कानबाली, पायल और तीन हजार नकद रुपये थे. वह जब बक्सर पहुंचीं, तो वहां की जीआरपी को मामले की जानकारी दी. इसके बाद बक्सर जीआरपी ने उनके आवेदन को पटना जंक्शन जीआरपी को भेज दिया. पटना रेल पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी है. इसी प्रकार, किशनगंज के रहने वाले जावेद आलम का मोबाइल फोन बदमाशों ने महानंदा एक्सप्रेस में गायब कर दिया. उनके आवेदन पर पटना जंक्शन जीआरपी में केस दर्ज किया गया है.

भागलपुर के तिलकामांझी के सच्चिदानंद नगर कॉलोनी निवासी प्रमोद चौधरी की बेटी पूर्णिमा कुमारी का ट्रॉली बैग ट्रेन से चोरी हो गया. इस संबंध में उन्होंने भागलपुर जीआरपी थाना में शिकायत दर्ज करायी है. दिये गये आवेदन में उन्होंने कहा है कि वह अपनी बहन स्वाती के साथ दिल्ली से भगालपुर आ रही थी. जहां सोमवार को बाढ़ स्टेशन के बाद उनका ट्रॉली बैग चोरी हो गया. बैग में उनका लैपटॉप, कपड़े, बहन के मैट्रिक से लेकर ग्रेजुएशन तक के सर्टिफिकेट, आधार कार्ड, पासबुक, पासपोर्ट आदि रखा था. उन्होंने बताया कि मामले में उन्होंने पुलिस से उनके सामानों को

ढूंढने के लिए गुहार लगायी है. पर पुलिस मामले में तत्परता नहीं दिखा रही है.

भागलपुर के सबौर निवासी एक जनप्रतिनिधि भी इस चोर गिरोह के शिकार हो चुके हैं. अपने परिवार के साथ वो भागलपुर-पटना रूट में सफर कर रहे थे. विक्रमशिला एक्सप्रेस की एसी बोगी में महिला का पर्स ही चोरी कर लिया गया. उन्होंने बताया कि बाढ़ स्टेशन पर वंदे भारत ट्रेन रूकी थी. उसे देखने वो बाहर निकले. बाद में अपनी सीट पर आए और पत्नी व खुद के कुल तीन मोबाइल लेडीज पर्स में रख दिए. रात में उनका पर्स चोर ने गायब कर दिया.

चलती ट्रेन में चोरी की घटना तेजी से बढ़ रही है, जिससे सुरक्षा के दावों पर सवाल खड़ा होने लगा है. गाड़ी संख्या-09466 दरभंगा-अहमदाबाद एक्सप्रेस के एस-7 कोच से एक परिवार का लगेज लेकर चोर भाग निकला. इसमें 2 मोबाइल व नगद राशी थी. घटना बीते दिनों सोमवार की है. जब ट्रेन समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर की ओर रवाना हो रही थी. इस संदर्भ में ऋषि पोद्दार नाम के यात्री ने ऑनलाइन एफआइर दर्ज करायी है. शिकायत के बाद एसआरपी कंट्रोल मुजफ्फरपुर व समस्तीपुर आरपीएफ प्रभारी को मामले में कार्रवाई को लेकर सूचित किया गया है. सहयोग के लिए अहमदाबाद के अधिकारियों को भी जानकारी दी गयी है.

पटना जंक्शन पर अमृतसर हावड़ा ट्रेन में चढ़ने के दौरान ओड़िशा के भद्रक सेंदपुर निवासी उत्तम कुमार के गले से सोने की चेन छीन कर बदमाश भाग गये. इस संबंध में उत्तम कुमार ने पटना जंक्शन जीआरपी में अज्ञात बदमाश के खिलाफ में केस दर्ज करा दिया है. बताया जाता है कि वे अपने सामान के साथ अमृतसर हावड़ा ट्रेन में चढ़ रहे थे. इसी दौरान उनके पीछे से एक बदमाश पहुंचा और उनके गले से सोने की चेन खींच कर दूसरी ट्रेन के अंदर चला गया. वह ट्रेन धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ रही थी. उत्तम कुमार जब तक उसे पकड़ने की कोशिश करते, तब तक वह ट्रेन जा चुकी थी. इसके बाद वे पटना जंक्शन जीआरपी पहुंचे और शिकायत दर्ज करायी. रेल पुलिस सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से बदमाश की पहचान करने में जुटी है.

गाड़ी संख्या-14007 लिच्छवी एक्सप्रेस से मोबाइल चुराने वाले को जीआरपी की टीम ने मंगलवार की शाम मुजफ्फरपुर के मोतीझील थाना चौक के पास से गिरफ्तार कर लिया. जिसकी पहचान शत्रुघ्न पटेल के रूप में हुई है. कोच -एस-2 में सफर कर रहे कानपुर के निवासी दीपक दीक्षित परिवार के साथ ट्रेन में यात्रा कर रहे थे. मुजफ्फरपुर में ट्रेन रूकने के दौरान यात्री का मोबाइल चोरी हो गया. उन्होंने इस बारे में शिकायत की. मामले में जीआरपी थानाध्यक्ष ने बताया कि छानबीन के बाद मोबाइल के साथ मोतीझील से युवक को पकड़ लिया गया. मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है.

## सुपौल के स्कूल में नर्सरी के छात्र ने की फायरिंग, तीसरी कक्षा के स्टूडेंट को लगी गोली

**सुपौल, एजेंसी।** सुपौल के त्रिवेणीगंज नगर परिषद अंतर्गत वार्ड नंबर 16 में स्थित एक बोर्डिंग स्कूल में गोलीबारी की घटना घटी है . नर्सरी कक्षा में पढ़ने वाले एक छात्र ने बुधवार की सुबह स्कूल में फायरिंग की जिसमें तीसरी कक्षा के एक छात्र को गोली लगी है और वह जख्मी हुआ है. घटना ने सबको हैरान करके रख दिया है. घायल छात्र को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया. गुस्साए परिजनों ने हंगामा किया है.

मिली जानकारी के अनुसार, त्रिवेणीगंज के लालपट्टी स्थित सेंट जॉन बोर्डिंग स्कूल में नर्सरी कक्षा में पढ़ रहा एक छात्र अपने बैग में हथियार लेकर स्कूल पहुंच गया. बुधवार को उक्त छात्र ने बैग से हथियार निकालकर उसी स्कूल में तीसरी क्लास में पढ़ रहे 10 वर्षीय एक छात्र पर गोली चला दी. गोली बच्चे के बाएं हाथ में लगी है. वो बाल-बाल बच गया. वह इस हमले में ज़ख्मी हुआ है जिसका अनुमंडलीय अस्पताल

त्रिवेणीगंज में ईलाज चल रहा है.

बताया जा रहा है कि नर्सरी कक्षा का उक्त हमलावर बच्चा अपने बैग में हथियार लेकर स्कूल पहुंचा था. प्रार्थना से पहले उसने अपने बैग से हथियार निकाल लिया और तीसरी कक्षा के एक छात्र पर गोली चला दी. चर्चा है कि बच्चा अपने पिता का पिस्तौल बैग में लेकर स्कूल था. पुलिस मामले की जांच में जुट गई है.

घायल बच्चे के मामा ने बताया कि प्रार्थना होने के बाद सभी बच्चे पढ़ने बैठे थे. इस दौरान स्कूल का एक ही एक बच्चा पिस्टल लेकर क्लासरूम में घुस गया. उसने मेरे भांजे को सीने में गोली मारनी चाही. मेरे भांजे ने बचने की कोशिश की और इस दौरान गोली उसके हथेली के आर-पार हो गई. जिसने गोली चलाई वो बच्चा भी स्कूल में ही पढ़ता है.

वहीं इस घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची है और मामले की जांच चल रही है. पुलिस की ओर से अभी घटना को लेकर कुछ बयान नहीं दिया गया है. मिली जानकारी के अनुसार, आरोपी बच्चा पुलिस के पास है.

## पंडारक में मद्य निषेध टीम पर हमला, रोड़ेबाजी व फायरिंग

**पंडारक, एजेंसी।** थाना क्षेत्र के कोंदी गांव में सोमवार की रात मद्य निषेध टीम बाढ़ ने कोंदी पेट्रोल पंप के पास विकेश कुमार नाम के एक व्यक्ति को नशे की हालत में पकड़ लिया. टीम उसे अपने साथ ले जाने लगी. इसकी खबर फैलते ही उग्र परिजन व ग्रामीणों ने टीम की गाड़ी को रोक कर उस पर हमला बोल दिया और गाड़ी में बैठे आरोपित को जबरन छुड़ाने का प्रयास करने लगे. असफल होने पर हमलावरों ने टीम पर रोड़ेबाजी व फायरिंग की. हालांकि इस दौरान पुलिस को हल्की चोट लगी. इस बीच खतरे को भांपते हुए मद्य निषेध टीम में तैनात सैप के जबान आत्मरक्षार्थ एक राउंड फायरिंग की गयी. इसके बाद टीम आरोपित को लेकर चली गयी. उत्पाद थाना बाढ़ के अवर निरीक्षक शैलेंद्र कुमार के बयान पर पंडारक थाने में अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया है. जिसमें कैदी को जबरन छुड़ाने, फायरिंग व रोड़ेबाजी करने का आरोप लगाया गया है. पकड़ा गया आरोपित उसी गांव का रहने वाला है. पुलिस मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है. थाना क्षेत्र के हरदासबीघा गांव में मंगलवार को दो पक्षों के बीच किसी बात को लेकर पहले कहासुनी के बाद एक शख्स ने गोली चला दी. गोली स्व कामेश्वर यादव उर्फ मास्टर साहब के बेटे पंकज कुमार यादव के पैर में लग गयी. साथ ही तीन अन्य लोग भी घायल बताये जा रहे हैं. इन सभी को लाठी-डंडे से पीटा गया. घायल अवस्था में सभी को ग्रामीणों ने स्थानीय पीएचसी ले गये जहां से डॉक्टर ने सभी को पीएमसीएच भेज रेफर कर दिया. वहीं ग्रामीणों ने बताया कि पंकज कुमार यादव की देखरेख में पड़ोस के ही एक जमीन थी. जहां बिजली विभाग के कर्मचारी उस जमीन के आगे वहां पोल लगा रहे थे. जिसकी सूचना पंकज ने जमीन मालिक को दी. उसके बाद उसके एक पड़ोसी ने पंकज के घर जाकर मारपीट व गोली चलाई जिसमें पंकज घायल हो गया साथ ही तीन अन्य लोगों के साथ भी हमलावर ने लाठी-डंडे से मारपीट की।

## संपत्ति के विवाद में घर में घुस महिला की गोली मार कर हत्या

**फुलवारीशरीफ, एजेंसी।** मंगलवार की सुबह संपतचक में गोपालपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत इलाहीबाग में 60 वर्षीय महिला मनोरमा देवी की गोली मार हत्या कर दी गयी. हत्या की वारदात को बाइक सवार तीन बदमाशों ने अंजाम दिया जो वहां लगे सीसीटीवी में साफ नजर आये हैं. महिला की हत्या फर्स्ट फ्लोर के कमरे में की गयी जबकि अन्य तीन फ्लोर पर किरायेदार थे. सूचना पाकर गोपालपुर थाना पुलिस डॉग स्क्वायड व एफएसएल की टीम को बुलाकर छानबीन की. महिला की हत्या की खबर सुनकर इलाहीबाग में रहने वाली उसकी बेटी पूनम भी वहां पहुंची और हत्या में अपने भाई, चचेरे भाई उसके साढ़ू, साढ़ू के बेटे समेत अन्य के खिलाफ आरोप लगाया है. बताया जाता है कि फुलवारीशरीफ नया टोला निवासी नन्हु राय की पत्नी मनोरमा देवी इलाहीबाग में अपने चार मंजिला मकान में फर्स्ट फ्लोर पर मौजूद थी. सुबह करीब आठ बजे के आसपास तीन बदमाश घुसे और मनोरमा देवी को ताबड़तोड़ कई गोली मार दी. पुलिस के मुताबिक महिला के शरीर में सिर में दो व पीठ में दो गोली लगी है. किरायेदार शोर मचाने लगे. मनोरमा देवी के पति नन्नू राय की भी संपत्ति को लेकर हत्या की गयी थी और इसकी भी हत्या के पीछे संपत्ति का विवाद बताया जाता है. फुलवारीशरीफ के नया टोला के लोगों ने बताया कि संजय की दिमागी हालत ठीक नहीं रहती है और वह अपने घर पर ही रहता है. गोपालपुर थानाध्यक्ष ने बताया कि संपत्ति विवाद में महिला की हत्या की गयी है. परिवार के लोग अभी तक लिखित प्राथमिकी दर्ज नहीं करायी है. सीसीटीवी फुटेज में जिन अपराधियों का चेहरा नजर आया है, उनकी पहचान कर गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है.

मनोरमा के पति ईश्वर चंद उर्फ नन्नू राय की भी करीब चार साल पूर्व नौबतपुर इलाके में हत्या कर दी गयी थी. ईश्वर चंद मूल रूप से फुलवारीशरीफ थाना के नया टोला के रहने वाले थे. कई साल पहले जब बेटे के साथ संपत्ति विवाद हुआ तो उन्होंने अपना नया मकान संपतचक के इलाहीबाग में बनाया और पत्नी मनोरमा के साथ रहने लगे. ईश्वर चंद को दो बेटे संजय और चुन्नू एक बेटी पूनम है।

## बिहार में डेंगू के मिले 265 पॉजिटिव केस, पटना में अब तक मिले 84 मरीज

**पटना, एजेंसी।** बिहार में डेंगू का संक्रमण लगातार बढ़ रहा है. नये इलाकों में डेंगू के मरीज मिल रहे हैं. जनवरी 2024 से 28 जुलाई 2024 तक बिहार में डेंगू के 265 पॉजिटिव केस पाए गए हैं. इसमें पटना में सबसे अधिक 84 केस मिले हैं. इसके अलावा, गया में 26, मुजफ्फरपुर में 18, सिवान में 11 और मधुबनी में 10 पॉजिटिव केस पाए गए हैं. अरवल एकमात्र जिला है जहां डेंगू का एक भी केस इस अवधि में नहीं मिला है. यह जानकारी अपर निदेशक सह राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ अशोक कुमार ने दी है.

डॉ अशोक कुमार ने कहा है कि डेंगू से बचाव के लिए राज्य सरकार द्वारा पानी जमे जगहों पर नियमित छिड़काव किया जा रहा है. आशा कार्यकर्ताओं को पानी वाली जगहों पर लार्वा की पहचान कर निरोधात्मक कार्यवाही करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है. डेंगू से बचाव का सबसे सशक्त माध्यम सही जानकारी एवं अपने दैनिक व्यवहार में स्वच्छता का पालन करना है.

उन्होंने बताया कि स्वयं सतर्क रहकर एवं जरूरी सुरक्षा अपनाकर डेंगू से सुरक्षित रहा जा सकता है. सरकारी चिकित्सीय संस्थानों में डेंगू के मरीज के लिए बेड रिज़र्व किये गए हैं. डॉ. कुमार ने कहा कि 10 सप्ताह तक सप्ताह में एक बार 10 मिनट तक घर की सफाई कर लेने से घर में डेंगू के मच्छर के प्रकोप को खत्म किया जा सकता है. इसके लिए सभी को घर में रखे चीजों जैसे कूलर, गमले, टूटे फूटे समान में पानी जमा होने से बचाने की जरूरत है. डेंगू के मच्छर साफ़ पानी में ही पनपते हैं. इसलिए सतर्कता उपचार से कहीं बेहतर विकल्प है.

पटना जिले में डेंगू के मरीजों के मिलने का सिलसिला जारी है. बीते 24 घंटे के अंदर फिर से पांच नये पीड़ित मरीज मिले हैं. इसके साथ ही जिले में अब कुल पीड़ितों मरीजों की संख्या बढ़कर 56 हो गयी है. मंगलवार को मिले मरीजों में एक बांकीपुर, एक अजीमाबाद, एक पाटलिपुत्र से मिले जबकि दो जिले के ग्रामीण इलाके बाढ़ और फतुहा से मिले.

सीवान के गोरेयाकोठी थाने के छितौली गांव का 18 वर्षीय युवक डेंगू से संक्रमित मिला है. बताया जाता है कि संक्रमित युवक आरिफ आलम बंगलुरू से अपने गांव संक्रमित होकर लौटा था. हालत गंभीर होने पर उसे डॉक्टरों ने पीएमसीएच पटना रेफर कर दिया. पटना पीएमसीएच में 5 जुलाई को हुई जांच में वह डेंगू संक्रमित पाया गया. स्वास्थ्य विभाग की टीम डेंगू मरीज के स्वास्थ्य पर लगातार नजर रख रही है.

# अश्लील वीडियो वायरल होने पर बहन की टूटी शादी, बदले की आग ने भाई को बना दिया अपराधियों का सरगना

**बांका, एजेंसी।** बांका जिला अंतर्गत शंभुगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत मझगांव गांव के कहानी किसी फिल्म से कम नहीं है. एक युवक अपराध की दुनिया में कदम रखता है और एक से एक अपराध की बड़ी घटनाओं को अंजाम देकर महज तीन महीने में ही सुर्खियां बटोर कर सलाखों के पीछे चला जाता है. लेकिन अपराध की दुनिया में उसके पैर रखने की कहानी सुनकर अच्छे- अच्छे लोगों का दिल भी पसीज जाता है.

बताया जा रहा है कि उक्त युवक की बहन की शादी तय हुई थी. अपनी बहन की शादी करने के लिए भाई ने अपना कीमती 10 कट्ठा जमीन को बिक्री कर दिया था. शादी फाइनल होने के कुछ ही दिन बाद दरवाजे पर बारात आने वाली थी. लेकिन गांव के कुछ युवकों ने हरकत करते हुए उसकी बहन की अश्लील वीडियो को वायरल कर दिया. इसके बाद उसकी बहन की शादी टूट गयी.

समाज के युवकों के इस हरकत को देखकर लड़की के भाई ने हथियार उठा लिया और बदले की भावना से अपराध की दुनिया में कदम रख दिया. अपने गिरोह को उसने तैयार किया और ग्रामीण क्षेत्र में अपना साम्राज्य कायम करने लगा. पंचायत प्रतिनिधि से लेकर सरपंच

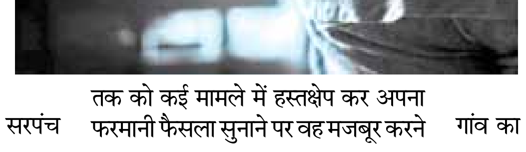

तक को कई मामले में हस्तक्षेप कर अपना फरमानी फैसला सुनाने पर वह मजबूर करने लगा.

लूटपाट के एक मामले में प्राथमिकी दर्ज होने के साथ ही वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया. जब पुलिस ने उससे पूछा कि ग्रेजुएट तक की पढ़ाई करके नौकरी के बदले अपराध की दुनिया में जाने की वजह क्या है तो उसने रोते हुए हर हकीकत को बयां कर पुलिस के सामने रख दिया. जिससे पुलिस भी आश्चर्य चकित रह गये.

इधर जिले के एक अन्य मामला रजौन थाना क्षेत्र के एक गांव का है जहां एक महिला का नहाने के दौरान अश्लील वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया. बताया जा रहा है कि एक महिला चापाकल पर स्नान कर रही थी. इसी दौरान चोरी-छिपे एक युवक ने स्नान करते हुए आपत्तिजनक फोटो व वीडियो अपने मोबाइल में कैद कर लिया. इस मामले में महिला को कुछ पता नहीं चल पाया और लड़का वीडियो बनाकर भाग निकला. महिला को वीडियो वायरल होने की जानकारी जब मिली तो वह व उनके परिजन अचंभित हो गये. इसको लेकर पीड़ित महिला ने थाना में शिकायत करते हुए उक्त युवक पर कार्रवाई की मांग की है. पुलिस मामले की जांच में जुट गयी है.

## देसी कट्टा के साथ दो नाबालिग हिरासत में

**बांका, एजेंसी।** पंजवारा पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मंगलवार को क्षेत्र के रामकोल मोड़ से देसी कट्टा के साथ दो नाबालिग को हिरासत में लिया है. थानाध्यक्ष मनीष कुमार ने इसकी जानकारी देते हुए बताया है कि उन्हें पंजवारा-धोरैया मुख्य मार्ग पर रामकोल के समीप अवैध हथियार के साथ बाइक सवार दो लड़कों को गुजरने की सूचना मिली थी. सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस ने बाइक पर जा रहे दो लड़कों को रोककर उनकी तलाशी ली गयी. तलाशी के क्रम में नाबालिग के पास से एक देसी कट्टा बरामद हुआ. जिसके बाद दोनों को हिरासत में लिया गया है. हिरासत में लिए गये नाबालिग से पुलिस पूछताछ कर रही है.

नहाने के दौरान महिला का बनाया अश्लील वीडियो, वायरल का आरोप

रजौन थाना क्षेत्र के एक गांव में एक महिला का गुप्त रूप से नहाने के दौरान अश्लील वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर देने का मामला प्रकाश में आया है. बताया जा रहा है कि एक महिला चापाकल पर स्नान कर रही थी. इसी दौरान चोरी-छिपे एक युवक ने स्नान करते हुए आपत्तिजनक फोटो व वीडियो अपने मोबाइल में कैद कर लिया. इस मामले में महिला को कुछ पता नहीं चल पाया और लड़का वीडियो बनाकर भाग निकला. महिला को वीडियो वायरल होने की जानकारी जब मिली तो वह व उनके परिजन अचंभित हो गये. इसको लेकर पीड़ित महिला ने थाना में शिकायत करते हुए उक्त युवक पर कार्रवाई की मांग की है.

STONE CLINIC MOTIHARI
स्टोन क्लिनिक मोतिहारी
शास्त्री नगर, महिला कॉलेज रोड, मोतिहारी, बैंक रोड, राजेश्वरी पैलेस होटल के पूरब वाली गली में

# विजन फॉर विकसित भारत पर कार्यक्रम का आयोजन

बीएनएम। मोतिहारी

भारतीय शिक्षण मंडल, युवा आयाम और एलएनडी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में विजन फॉर विकसित भारत कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को शहर के लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय के सभागार में किया गया। उक्त कार्यक्रम में शोधपत्र व लेखन प्रतियोगिता के विषय में उपस्थित छात्र/छात्राओं को विभिन्न वक्ताओं द्वारा जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम का विधिवत दीप प्रज्वलित कर श्रीगणेश किया गया। परंपरानुसार मंत्रों के उच्चारण नवीन तिवारी द्वारा किया गया। प्रारंभ में मुख्य अतिथि और वक्ताओं को अंगवस्त्रम व पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य (प्रो.) डॉ. राजेश कुमार सिन्हा ने भारतीय शिक्षण मंडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं को शोध पथ पर अग्रसर करने की भावना का मैं स्वागत करता हूं। प्राचार्य डॉ. सिन्हा ने कहा कि शैक्षिक परिसर में इस ढंग के कार्यक्रमों से युवा चेतना का विकास होता है। उनके चिंतन में निखार आता है और वे बेहतर शोध के संवाहक बनते हैं। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय शिक्षण मंडल के प्रांतीय उपाध्यक्ष डॉ. साकेत रमण ने कहा कि युवाओं में भारतबोध का विकास इस प्रतियोगिता का मूल लक्ष्य है। भारतीय भावनाओं और मूल्य आदर्शों को नई शिक्षा नीति में प्रमुखता देना शिक्षण मंडल का प्रमुख उद्देश्य है। भारत का समस्त ज्ञान जिज्ञासा पर टिकी है और शोध कार्य के लिए जिज्ञासा एक आवश्यक अंग है। शोध ज्ञानार्जन की सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। अतः आप सबों को इस शोध लेखन प्रतियोगिता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना चाहिए। भारतीय शिक्षण मंडल के प्रांत शैक्षिक प्रमुख डॉ.विकास पारीख ने कहा कि इस अखिल भारतीय प्रतियोगिता का प्रमुख उद्देश्य आपको शोधोन्मुख बनाना है। इस माध्यम से आप युवाओं के विचार देश दुनिया तक पहुंचेंगे। युवा भारत के चिंतन से विश्व समुदाय लाभान्वित होगा। दुखद यह है कि हम शोधकार्य में दुनिया के बहुत सारे छोटे-छोटे देशों से पीछे चल रहे हैं। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य शोध के प्रति युवाओं में जागृति फैलाना है। इसी क्रम में प्रांत प्रमुख, अनुसंधान गतिविधि भारतीय शिक्षण मंडल प्रो.संतोष त्रिपाठी ने शिक्षण मंडल के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने ने कहा कि अगर भारत को फिर से अपने पुराने गौरव को हासिल करना है तो शोध के माध्यम से ही संभव है। शिक्षण मंडल के प्रांत मंत्री नवीन तिवारी ने इस शोध प्रतियोगिता और शिक्षण मंडल के उद्देश्यों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया और प्रतियोगिता में पंजीयन की विस्तृत प्रक्रिया बताई। इस अवसर पर राष्ट्रीय शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का समापन मंत्रोच्चार और शांतिपाठ के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रियरंजन ने किया। आभार प्रदर्शन एजुकेशन के प्रभारी डॉ. त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर डॉ. कृष्ण कुमार सिन्हा समेत विविध विभागाध्यक्ष, शिक्षक और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

# डीएम ने जिला परिवहन कार्यालय का किया निरीक्षण

बीएनएम। मोतिहारी

जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल ने बुधवार को जिला परिवहन कार्यालय का निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी के द्वारा जिला परिवहन कार्यालय में अवस्थित काउंटरों का निरीक्षण करते हुए काउंटरों पर डाटा इन्ट्री ऑपरेटरों द्वारा किये जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई। जिला परिवहन पदाधिकारी से आरसी स्मार्ट कार्ड प्रिंटिंग लंबित होने से संबंधित पृच्छा की गयी। जिस पर जिला परिवहन पदाधिकारी के द्वारा बताया गया कि वर्तमान में विभाग द्वारा पर्याप्त संख्या में आरसी स्मार्ट कार्ड उपलब्ध नहीं कराया गया है। इस पर डीएम के द्वारा जिला परिवहन पदाधिकारी को विभाग से आरसी स्मार्ट कार्ड पर्याप्त संख्या में प्राप्त करते हुए अविलंब लंबित कार्यों को पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया।मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना से संबंधित किये जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए जिला परिवहन पदाधिकारी को उक्त योजना का सफल क्रियान्वयन हेतु विभाग द्वारा निर्धारित समय-सारणी के अनुरूप कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया गया साथ ही उक्त योजना का जिलान्तर्गत व्यापक प्रचार-प्रसार करने हेतु भी निर्देशित किया गया, जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना का लाभ उठाया जा सके। परिवहन कार्यालय के निरीक्षण के समय कार्यालय के सभी कर्मी उपस्थित रहे।

# विहार के एक ऐसा गांव जहां आज भी रोड नहीं

- अंग्रेजों से तो आजादी मिल गई,लेकिन रोड से आजादी आज भी नहीं मिली
- 400 परिवार वाले आज भी रोड से कोसों दूर है

बीएनएम। मोतिहारी

बिहार के एक ऐसा जिला गोपालगंज जिसके अंतर्गत दीयरावटी इलाक़ा राजवाही गांव में आज भी रोड नहीं। 1947 में अंग्रेजों से तो आजादी मिल गई लेकिन आज भी वहां के लोगों को रोड से आजादी नहीं मिली।रोड के बिना रजवाही गांव के लगभग 400 परिवार वाले को जिंदगी नरक के समान है।वही रोड से जूझ रहे नाराज स्थानीय ग्रामीणों ने विधायक,सांसद के विपक्ष एकजुट ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर रोस जताया एवं अपना आक्रोश व्यक्त किया। रोड से जूझ रहे नाराज ग्रामीणों ने बताया कि रोड के अभाव में जिंदगी नरक बन चुका है, विधायक, सांसद, मुखिया वोट के समय आते हैं और अपना प्रतिलोभन देकर जनता को लुभा कर वोट ले लेते हैं और फिर कभी दोबारा आते नहीं है।कभी-कभी किसी का सीरियस तबीयत खराब हो जाती है तो रोड की अभाव में रास्ते में ही दम तोड़ देना पड़ता है। वही एकजुट ग्रामीणों ने चंदे के पैसे इकट्ठा कर रोड बनवाने के ख्याल से भरवा रहे हैं लेकिन सांसद विधायक मुखिया दरकिनार कर रहे हैं।

# भांजा ने कराई थी मामा की हत्याः मोतिहारी में 5 लाख रुपए में शूटर किया हायर, व्यवसाय में हिस्सेदारी नहीं देने से था नाराज

बीएनएम। मोतिहारी

नेपाल में हार्डवेयर व्यवसायी का काम करने वाले रामायण साह हत्या कांड का पुलिस ने महज 24 घंटे के अंदर खुलासा कर दिया है। रामायण की हत्या उसके भांजा ने कराई थी। इसको लेकर पांच लाख रुपए में उसने सुपारी किलर को हायर किया। एक लाख रुपए देकर हत्या करवाई थी। हत्या के बाद चार लाख रुपया देना बाकी था। शूटर ने धमकी दी है कि सुपारी का शेष पैसा नहीं देने पर तुम्हारी भी हत्या कर देंगे। चकिया एसडीपीओ सतेंद्र सिंह ने खुलासा करते हुए बताया कि पिपरा थाना क्षेत्र के बेदीबन मधुबन गांव में बाइक सवार बदमाशों ने गोली मार कर रविवार को नेपाल के व्यवसायी की हत्या कर दी थी।

**दो भांजा और बहनोई अरेस्ट-** हत्या के बाद मृतक की पत्नी पद्मा देवी के आवेदन पर पांच नामजद और अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। सदर एएसपी शिखर चौधरी ने एसडीपीओ के नेतृत्व में टीम का गठन किया। पिपरा थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने छापेमारी कर घटना में शामिल मृतक के दो भांजा और उसके बहनोई को गिरफ्तार किया है। जबकि, इस मामले में अन्य भगना सूरज कुमार और दो शूटर की तलाश जारी है।

**भांजे ने पांच लाख रुपए में शूटर को किया था हायर-** मृतक रामायण साह का भांजा सूरज और ओमप्रकाश ने मिल कर रामायण की हत्या की साजिश रची थी। पांच लाख रुपया में शूटर को हायर किया था। 27 जुलाई को जैसे ही रामायण अपने पिता का शव लेकर नेपाल से गांव के लिए चला। इसी बीच उसका भांजा सूरज ने शूटर को हायर कर दिया, दूसरी तरफ ओमप्रकाश ने शूटर को एक लाख रुपए एडवांस दे दिया और रेकी में लग गया।

**40 प्रतिशत की हिस्सेदारी मांगने के बाद बढ़ा विवाद-** रामायण साह के पिता की नेपाल में मौत हो गई थी। वह अपने पिता के शव को लेकर मोतिहारी पहुंचे। मालूम हो कि यह मोतिहारी के ही रहने वाले थे और नेपाल में व्यवसाय करते थे। रामायण अपने भांजे को काम के लिए नेपाल लेकर गए थे। लेकिन, भगना काम में 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी मांगने लगा। इससे दोनों के बीच विवाद बढ़ने लगा। विवाद इतना बढ़ गया कि भांजे ने मामा की हत्या करा दी।

**दो बदमाशों ने सीने में मारी थी गोली-** 28 जुलाई को रामायण, बाजार से अपने पिता को पानी देने के लिए मिट्टी का बर्तन लेकर लौट रहे थे। घर से महज पांच सौ मीटर की दूरी पर एक बाइक पर सवार दो बदमाशों ने उसे सामने से घेर कर सीना में गोली मार दी। गोली लगने के बाद भी रामायण ने भाग कर जान बचाना चाहा। लेकिन उसकी मौत हो गई। उसके साथ पीछे स्कूटी पर बैठा उसका भतीजा विकास ने घटना की जानकारी घर वालों को दी। इसके बाद घटना स्थल पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

# मोतिहारी में यूपी पुलिस का फर्जी इंस्पेक्टर गिरफ्तार

बीएनएम। मोतिहारी

पुलिस ने यूपी पुलिस के एक फर्जी इंस्पेक्टर को गिरफ्तार किया है। इसके पास से एक नकली पिस्टल, यूपी पुलिस की वर्दी और दो मोबाइल बरामद किया गया है। पूछताछ के दौरान उसने बताया कि वह यूपी के गाजीपुर जिला के भावरपुर थाना क्षेत्र के काशीनाथ यादव का बेटा अखिलेश यादव (26) है।उक्त फर्जी इंस्पेक्टर को गोविंदगंज थाना क्षेत्र के मननपुर गांव से गिरफ्तार किया गया है। अरेराज डीएसपी रंजन कुमार ने बताया कि सूचना मिली कि यूपी पुलिस का वर्दी पहने एक व्यक्ति गांव के लोगों पर अपने वर्दी का रौब दिखा रहा है। सूचना के साथ ही वरीय अधिकारी के निर्देश पर को एक टीम का गठन कर छापेमारी की गई।जहां से यूपी पुलिस के फर्जी इंस्पेक्टर अखिलेश यादव को नकली पिस्टल, नकली गोली, वर्दी और दो मोबाइल के साथ गिरफ्तार किया गया।जांचोपरांत उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

# मुंबई से चुरायी 10 लाख की घड़ियां मोतिहारी के घोड़ासहन से बरामद

बीएनएम। मोतिहारी

मुंबई में घड़ी दुकान का शटर काटकर 25 लाख की घड़ियां चोरी करने के मामले में मुंबई पुलिस ने जिले के घोड़ासहन व शिकारगंज थाना पुलिस के सहयोग से देर रात शिकारगंज के परेवा गांव में अनीता देवी व घोड़ासहन के हसन नगर में मोबिन देवान के घर में छापेमारी करते हुए करीब दस लाख रुपये मूल्य की घड़ियां बरामद की है। जानकारी के अनुसार चोरी के उक्त मामले में मुंबई पुलिस ने मोबिन देवान सहित तीन लोगों को मुंबई में ही गिरफ्तार किया था, जिसने पूछताछ के दौरान घोड़ासहन के शटरकटवा गिरोह के शामिल होने की बात कही थी,जिसके बाद मुंबई पुलिस ने उसकी निशानदेही पर उसके घर से चोरी की घड़ियां बरामद की है। उसके घर से चोरी के 60 मोबाइल भी बरामद किए गए हैं, जिनकी कीमत करीब 20 लाख रुपये बतायी गयी है। सभी मोबाइल भी चोरी के हैं। मोतिहारी पहुंची मुंबई पुलिस के अनुसार बीते 19 जुलाई की अहले सुबह शटरकटवा गिरोह के शातिरों ने मुंबई में एक घड़ी शोरूम से करीब 25 लाख की घड़ियां चुरा ली थीं। अनुसंधान के क्रम में शटरकटवा गिरोह के शातिर मोबिन देवान सहित तीन को मुंबई में गिरफ्तार किया गया, जबकि अन्य चोरी की घड़ियां लेकर घोड़ासहन पहुंचे व मोबिन के घर में छुपा दी।जिसके पुलिस मोबिन को लेकर सोमवार को घोड़ासहन व शिकारगंज पहुंची और स्थानीय पुलिस के साथ छापेमारी कर चोरी की घड़ियां व मोबाइल बरामद की। थानाध्यक्ष शंभू मांझी ने बताया कि बरामद घड़ी व मोबाइल को मुंबई पुलिस अपने साथ ले गयी। दो दिन पहले ही मुंबई पुलिस ने 53 लाख रुपये के आइफोन चोरी मामले में घोड़ासहन से एक शातिर को गिरफ्तार किया था।

# नगर क्षेत्र के पीडीएस दुकानों का अनुमंडल पदाधिकारी ने किया निरीक्षण

बीएनएम। मोतिहारी

सदर अनुमंडल पदाधिकारी श्रेष्ठ अनुपम के द्वारा मोतिहारी नगर निगम क्षेत्र के वार्ड नंबर 39 स्थित लालबाबू साह व रामचंद्र ठाकुर, वार्ड नंबर 40 स्थित रघुनाथ साह के सार्वजनिक वितरण प्रणाली अंतर्गत आवंटित दुकानों की जांच की गई। जांच के दौरान सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दुकानदार उपस्थित थे। अनुमंडल पदाधिकारी के द्वारा तीनों दुकानों में स्टॉक एवं वितरण का दुकान में संधारित पंजी से मिलान किया गया। वहां पर उपस्थित आम नागरिक एवं लाभुको से मिलकर अनुमंडल पदाधिकारी ने खाद्यान्न के वितरण के बारे में पूछताछ की और सही वजन में अनाज मिलने की जानकारी प्राप्त की। वहां पर उपस्थित लोगों ने बताया कि डीलर के द्वारा सही वजन में खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है। अनुमंडल पदाधिकारी को आम लोगों से कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई। अनुमंडल पदाधिकारी के द्वारा अनुमंडल के सभी डीलरों को समय से खाद्यान्न वितरित करने का निर्देश देते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि घटतौली की शिकायत मिलने पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि पीडीएस दुकानों की जांच लगातार जारी रहेगी। यहां पर डीलरों के द्वारा बताया गया कि प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी (एमओ) के द्वारा भी समय-समय पर जांच किया जा रहा है एवं अनाज के उठाव में उनका सहयोग मिल रहा है। इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी के साथ प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

MADAN RAJ NURSING HOME
HOSPITAL ROAD MOTIHARI, (BIHAR)
Contact No.- 9801637890, 6200480505, 9113274254

# गांव की लड़कियों ने डॉ. कलाम साहब के पुण्यतिथि पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में भाग लेकर इतिहास रची

## कलाम यूथ लीडरशिप कांफ्रेंस में प्रधानाध्यापक जटा शंकर प्रसाद को मिला "डॉ. कलाम लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड"

बीएनएम। पूर्वी चंपारण/तेतरिया/राजेपुर

मिसाइलमैन से प्रसिद्ध भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. एपीजे कलाम के पुण्यतिथि पर कोलकता में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलन कलाम यूथ लीडरशिप कांफ्रेंस 2024 में पूर्वी चंपारण जिला के राजेपुर अवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय के 7 लड़कियों ने राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में शामिल होकर बिहार का प्रतिनिधित्व किया। पहली बार गाँव के दहलीज से बाहर निकलकर ग्रामीण प्रतिभा का परिचय दिया। कांफ्रेंस में कई देश के युवा प्रतिनिधि शामिल हुए। श्रीलंका से इनथीजा करीम, नेपाल से अभिनव कुमार चौधरी, तबरेज आलम अंसारी, रूबिना खातून तो वही बांग्लादेश से सुकान्ता दास , नाइजीरिया से ओटो ओबोनग, कैमरून से एन. अल्बर्ट के साथ 28 राज्य और बिहार के 38 जिला से युवा लगभग 300 युवा प्रतिनिधि और कलामपंथी शामिल हुए। यह कांफ्रेंस लगातार 2 दिन (27-28 जुलाई) तक आयोजित हुआ जिसमें पहले दिन ये लड़कियां ग्रुप डिस्कशन का हिस्सा बनी और अपनी बातें भी

रखी। वहीं दूसरे दिन ये लड़कियां अपने अहम योगदान के लिए सम्मानित भी हुई। कलाम साहब के उद्देश्य को पूरा करने हेतु समर्पित पूरे देश के 12 व्यक्तित्व को डॉ. कलाम लाइफटाइम यचीवमेनेट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक जटा शंकर प्रसाद को यह सम्मान दिया गया। बताते चले कि श्री प्रसाद दशकों से अपने स्कूल के शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार हेतु प्रयास करते रहे और आज इनके बदौलत स्कूल की दिशा और दशा सकारात्मक रूप से परिवर्तित हो चुका है। इनके सहयोग से ही ये 7 लड़कियां सुदूर गाँव से निकलकर एक बड़े मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज की। आज स्कूल परिवार द्वारा इन सभी लड़कियों का अभिनंदन समारोह कर स्वागत और हौसला आफ़ज़ाई किया गया। अभिनंदन समारोह का मुख्य अतिथि के रूप में कलाम यूथ लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित अब्दुल कलाम और विनय कुमार शामिल रहे। अभिनंदन समारोह में लड़कियों ने अपने अनुभव साझा किये और वहाँ मिले प्रमाण-पत्र, मेडल, ट्रॉफी,बैग कलाम साहब की स्मृतिचिन्ह दिखाकर अपने सहपाठियों का हौसला अफजाई किया। राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में अनामिका कुमारी, सोनी रंजन, निशा कुमारी साहू, सुलेखा कुमारी, अंजली कुमारी, निशा कुमारी कुशवाहा, प्रीति कुमारी शामिल रही। वहीं बीरेंद्र कुमार यादव, निर्मला चौधरी, संजय कुमार, सौरभ कुमार, पंकज कुमार, पुष्पा कुमारी, सारिका सिंह, शशि प्रभा जायसवाल, मुन्ना कुमार, शिक्षक अभिनंदन समारोह में शामिल रहे।

# नेपाल के वीरगंज में सरिसवा नदी में कचरा गिरा रहे औधौगिक इकाई के गेट पर फेका गया कचड़ा

बीएनएम। मोतिहारी

जिले के रक्सौल व नेपाल के वीरगंज शहर की लाइफ लाइन सरिसवा नदी के प्रदूषण को लेकर वीरगंज महानगर पालिका ने बड़ी कारवाई की है। नदी को प्रदूषित करने वाले विभिन्न नेपाली फैक्ट्रियों के गेट के सामने कचरा उड़ेल दिया है। वीरगंज महानगरपालिका के मेयर राजेशमान सिंह ने बताया कि लगातार चेतावनी के बाद इन फैक्ट्रियो ने बिना शोधन के प्रदूषित पानी सरिसवा नदी में बहाया जा रहा है।जिसके बाद उक्त निर्णय लिया गया।इस कड़ी में मंगलवार को परवानीपुर स्थित अर्निका प्रोसेसिंग उद्योग प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य गेट पर 16 ट्रैक्टर कूड़ा कचरा डाला गया।दिया। वही श्री सिद्धि टेक्सटाइल्स प्राइवेट लिमिटेड नामक फैक्ट्री के मुख्य गेट पर बीस ट्रैक्टर कूड़ा फेंक कर रास्ता अवरुद्ध करने की करवाई की गई। थी। इसके पूर्व मोरियम लेदर इंडस्ट्रीज के गेट पर कुड़ा फेका गया। महानगरपालिका के इस कारवाई से फैक्ट्री संचालको और कर्मियों में खलबली मची है।महानगरपालिका के पर्यावरण निरीक्षक प्रकाश ने बताया कि इस कारवाई के बाद फैक्ट्री संचालक नदी में प्रदूषण न फैलाने के लिए प्रतिबद्धता जतायी है।महानगर पालिका के स्वच्छता प्रकोष्ठ के

प्रमुख सरफुद्दीन मियां ने बताया कि नेपाल के बारा जिला के राम वन से निकलने वाली पहाड़ी नदी सरिसवा के प्रदूषण मुक्ति को ले कर रक्सौल और वीरगंज में लगातार आवाज उठ रही है। जिसको देखते हुए वीरगंज महानगर पालिका प्रशासन नदी में रसायन, कूड़ा कचरा डालने के दोषी फैक्ट्री संचालकों के विरुद्ध लगातार करवाई और जुर्माना कर रही है। निरंतर दी जा रही चेतावनी के बाद भी स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। उन्होंने बताया कि तीन माह पूर्व 9 फैक्ट्री संचालकों ने प्रशासन के साथ बैठक में नदी को प्रदूषित नही करने की प्रतिबद्धता जताई थी। वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाने और प्रदूषण नियंत्रण को ले कर अंतिम तौर पर 15 दिन का लिखित समय लिया था,बावजूद स्थिति में सुधार नहीं होने के बाद बाध्य होकर उक्त कदम उठाया गया है। उल्लेखनीय है,कि सरिसवा नदी के प्रदूषण के कारण भारत व नेपाल के भूगर्भ जल काफी प्रदूषित हो चुका है।जिस कारण इस पूरे क्षेत्र में बड़े पैमाने पर लोग कैंसर, लिवर सिरोसिस जैसे घातक रोगों के शिकार हो रहे है।अब तक इससे सैकड़ों लोगों की जान जा चुकी है। नदी के प्रदूषण लेबल इस स्तर पर आ गया है,कि जलीय जीव मर रहे है। नदी का पानी काला और बदबू दार हो चुकी है, जिससे तट पर बसने वालो का रहना दूभर हो चला है।इसके प्रदूषण से बूढी गंडक और गंगा में भी प्रदूषण बढ रहा है।

# साहित्य जगत के देदीप्यमान नक्षत्र थे मुंशी प्रेमचंद: अंजनी अशेष

## प्रेमचंद और म०रफी को दी गई श्रद्धांजलि

बीएनएम। मोतिहारी

कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद के जन्मदिन और मशहूर पार्श्वगायक मो० रफी की पुण्यतिथि पर बुधवार को शहर के धर्म समाज चौक स्थित द इंडियन सेंट्रल स्कूल के बच्चों के बीच भाषण व गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे स्कूल के प्राचार्य अंजनी अशेष ने कहा कि उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य जगत के देदीप्यमान नक्षत्र थे। उन्होंने किसानों, कामगारों और नारियों की दशा का जीवंत चित्रण अपनी कहानियों और उपन्यासों में किया। वहीं शहंशाह-ए-तरन्नुम मोहम्मद रफी ने हर मूड के गीतों को गाकर पार्श्व गायन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। मौके पर छात्र-छात्राओं ने प्रेमचंद और रफी की जीवनी पर प्रकाश डाला और रफी के गीतों को गाकर माहौल को सुरीला बनाया ।प्राचार्य अशेष ने रफी के गीतों को गाकर खूब तालियां बटोरीं । मौके पर निदेशक सामंत कुमार, राकेश शुक्ला दिनेश

शाह, किशन कुमार, रणजीत सिंह, मुस्कान खान, प्रिया कुमारी मुस्कान खातून, अंशु कुमारी, दिनेश चौधरी, प्रभु नाथ प्रसाद यादव, शिवनाथ प्रसाद,डीएन प्रसाद, पी प्रसाद, राजन कुमार, निधि कुमारी, बलदेव कुमार श्रीवास्तव, कुंदन कुमार, प्रेम शंकर तिवारी, अनूप कुमार, अभिन्न पांडेय, सौरभ कुमार, राबिया प्रवीण, राजेश कुमार श्रीवास्तव, कुमारी पूजा, शानू कुमार आदि मौजूद थे।

# हमेशा याद किये जाते हैं सराहनीय शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षक

## शिक्षक मो. जैनुद्दीन खान हुए सेवानिवृत

बीएनएम। मोतिहारी

सराहनीय शिक्षण कार्य के लिए शिक्षक हमेशा याद किये जाते हैं। उनका कार्यकाल अन्य शिक्षकों के साथ छात्र-छात्राओं के लिए काफी महत्वपूर्ण होता है। सेवानिवृति के बाद वे चले जाते हैं लेकिन उनकी यादें रह जाती है। उक्त बातें शिक्षा विभाग के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मो. साहेब आलम ने छतौनी स्कूल के शिक्षक मो. जैनुद्दीन खान के सेवानिवृत होने के उपलक्ष्य में आयोजित विदाई समरोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होनें मो. खान के कार्यकाल की सराहना की और कहा कि एक अच्छे शिक्षक की पहचान उसके शिक्षण कार्य से ही होती है। इस मामलें में मो. खान पूरी तरह से तत्पर रहे। उन्होनें उनके सुखद जीवन की कामना की और कहा कि नौकरी जब इंसान करता है तो उसे एक दिन सवानिवृत होना ही पड़ता है। संचालन कमलेश कुमार सिंह

ने किया। स्वागत प्रधानाध्यापक रिजवान अख्तर ने किया। जबकि मौके पर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी अभिजीत कुमार, शिक्षक अब्दुल हफीज, रेफाकत हुसैन, कार्यपालक सहायक हामीद रजा, मासूम रजा मो. जुबैर, मो. जमील अख्तर, मो. इमरान व नसीब रजा आदि मौजूद थे।

# प्रखंड प्रमुख ने पीएचसी के प्रसूति वार्ड मे निजी कोष से लगवाई तीन एसी

बीएनएम। रामगढ़वा

शासन और प्रशासन जिस कार्य को नहीं करा सका उसको रामगढ़वा मे प्रमुख रीता देवी ने कर दिखाया। रामगढ़वा प्रखंड प्रमुख रीता देवी ने पी एच सी रामगढ़वा के प्रसूति वार्ड मे निजी कोष से तीन ए सी लगा कर शासन और प्रशासन को सकारात्मक संदेश दिया है और नजीर भी बने हैं। मामला प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रामगढ़वा का है। जहां के प्रसूति वार्ड में जच्चा एवं बचा के लिए प्रमुख रीता देवी के निजी कोष से तीन ए सी को लगाया जा रहा है। बुधवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रामगढ़वा में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर एन डी सिंह से मिलकर प्रखंड विकास प्राधिकारी राकेश कुमार सिंह, बीपीआरओ इंद्रजीत कुमार,उप प्रमुख अरविंद पांडेय प्रमुख पति विशाल कुमार के साथ सामाजिक कार्यकर्त्ता भूषण सिंह मिलकर प्रसूति वार्ड में ए सी लगाने का अनुरोध किया। बता दें की प्रमुख रीता देवी के द्वारा पी एच

सी निरीक्षण के दौरान प्रसूति वार्ड में भर्ती महिला व उनके अभिभावकों ने गर्मी की समस्या को देखते हुए ए सी लगाने का अनुरोध किया था।लोगों के अनुरोध पर खुद प्रमुख रीता देवी प्रसुति वार्ड में खुद गई और वहां की वस्तु स्थिति को समझा।इन्होंने लोगों इनको शीघ्र ए सी लगाने का आश्वासन दिया था। इस आश्वासन के आलोक में बुधवार को पीएचसी के प्रसूति वार्ड में यह कार्य शुरू कर दिया गया है। मौके पर उपस्थित प्रखंड विकास पदाधिकारी राकेश कुमार सिंह ने बताया कि माननीय प्रमुख के द्वारा जनहित में यह कार्य कराया जा रहा है। प्रसूति वार्ड में यह सबसे जरूरी है।ए सी लग जाने से जच्चा बच्चा को सहूलियत होगी। साथी इसमें कार्य करने वाले चिकित्सा कर्मियों को भी काफी लाभ मिलेगा।

# मनु भाकर ने सूखे को खत्म किया

मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर पिछले दो ओलंपिक खेलों से निशानेबाजी में चले आ रहे सूखे को खत्म कर दिया है। मनु भाकर ओलंपिक निशानेबाजी में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला हैं। इससे पहले भारत ने निशानेबाजी में चार पदक जीते हैं और यह पदक जीतने वाले सभी चारों निशानेबाज पुरुष हैं। मनु भाकर ने ओलंपिक खेलों की शुरुआत में ही पदक पर निशाना साधकर इन खेलों में भाग ले रहे शूटरों का ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय दल की बॉडी लेंग्वेज बदल दी है। इससे अन्य खिलाड़ियों को अपना बेस्ट देने की प्रेरणा मिलेगी, जिससे भारत अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सफल हो सकता है। यह मनु की सफलता का ही प्रभाव था कि रमिता झिंदल ने 10 मीटर एयर राइफल के फाइनल में स्थान बनाया। हालांकि वह फाइनल में पहुंचकर भी पदक नहीं पा सकीं और उन्हें सातवें स्थान से ही संतोष करना पड़ा। हम सभी जानते हैं कि भारतीय निशानेबाज यदि तीन चार पदकों पर निशाना साधने में सफल हो जाएं तो भारतीय पदकों की संख्या दो अंकों में पहुंच सकती है। भाकर 2021 में हुए टोक्यो ओलंपिक में पिस्टल खराब हो जाने की वजह से अपना बेस्ट नहीं दे सकीं थीं। इसके बाद उनके कोच जसपाल राणा से संबंध खत्म हो गए थे, लेकिन जसपाल ने अलग होने के बाद उनके प्रदर्शन में गिरावट आती गई। वह तो खुदा का शुक्र है कि उन्हें सही समय पर जसपाल राणा से फिर से जुड़ने की जरूरत महसूस हुई। मनु ने पदक जीतने के बाद कहा कि एक बार पदक पक्का हो जाने पर खुशी हुई। पर आगे नहीं बढ़ पाने का अफसोस है। वह कहती हैं कि अगली स्पर्धा में पदक का रंग पीला यानी गोल्ड करने का प्रयास करूंगी। वह अपना ध्यान केंद्रित रखने के लिए गीता का पाठ करती हैं, जिसमें कहा गया है कि खुद के कर्म पर भरोसा रखो। यह बात भारतीय दल के सभी सदस्यों पर लागू होती है। भारत इस समय निशानेबाजी के अलावा बैडमिंटन, टेबल टेनिस, हॉकी, बॉक्सिंग आदि में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और एथलेटिक्स और कुश्ती शुरू होने पर भारत की पदक संभावनाएं और बढ़ेंगी। बहुत संभव है कि हम इस बार दर्जन भर पदकों तक पहुंच जाएं। पर हमें यहीं संतुष्ट होकर नहीं बैठना चाहिए क्योंकि अभी हम आबादी के हिसाब से विश्व स्तर से काफी पीछे हैं।

# प्रधानमंत्री की ऑस्ट्रिया यात्रा

लगभग 40-45 साल बाद कोई भारतीय प्रधानमंत्री ऑस्ट्रिया की यात्रा पर गया है । बहुत पहले इन्दिरा गांधी वहां गई थीं । ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्विटजरलैण्ड के बीच एक छोटा सा देश है । असल में रूस की यात्रा के तत्काल बाद मोदी जी का ऑस्ट्रिया यात्रा कई माइने रखता है । रूस और यूक्रेन युद्ध में ऑस्ट्रिया यूक्रेन के साथ है । भारत का रूस से घनिष्ठ सम्बन्ध नेहरू जी के काल से चला आ रहा है । नेहरू, टीटो और नासिर ने गुट-निरपेक्ष आन्दोलन चलाया था । मोदी जी के 10 साल में विश्व में भारत की छवि और भी ज्यादा तीव्र हो गई है । अतः बहुत से देश चाहते हैं कि वे वर्तमान यूक्रेन और रूस के युद्ध को रोकने में हस्तक्षेप करें । यह इसलिए भी कि भारत बुद्ध का देश है । ऑस्ट्रिया में मोदी जी ने कहा भी है कि भारत युद्ध नहीं बुद्ध का देश है । रूस से भारत के अच्छे संबंध होने के कारण रूस भारत को पेट्रोल सस्ते में सप्लाई कर रहा है । रूस से अपने संबंधों की गहराई को देखते हुए मोदी जी सधे शब्दों में रूस-यूक्रेन युद्ध पर बोलते हैं । संयुक्त राष्ट्र संघ में यूक्रेन को लेकर कोई भी प्रस्ताव रूस के खिलाफ आता है तो भारत वोट नहीं डालता । ऐवस्टेन करता है। अपनी वर्तमान ऑस्ट्रिया यात्रा में मोदी जी वहां के राष्ट्रपति व चांसलर से भी मिल चुके हैं । ऊर्जा, नवाचार और द्विपक्षीय सहयोग पर दोनों देशों का संयुक्त घोषणा पत्र भी आया है । पीएम मोदी ने कहा कि दोनों देशों ने आने वाले दशक के लिए सहयोग का खाका तैयार किया है । यह केवल आर्थिक सहयोग तक ही सीमित नहीं है । ढांचागत विकास हाइड्रोजन, अपशिष्ट प्रबंधन आदि भी शामिल हैं । संयुक्त वार्ता को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, भारत और ऑस्ट्रिया, आतंकवाद की कठोर निंदा करते हैं। हम सहमत है कि इसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जायेगा। आतंकवाद किसी भी तरह से न्यायसंगत नहीं हो सकता। हम संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में बदलाव के लिए सहमत हैं, ताकि उन्हें मजबूत बनाया जाये। मैंने और चांसलर नेहमर ने विश्व में चल रहे विवादों, चाहे यूक्रेन में संघर्ष हो या पश्चिम एशिया की स्थिति हो, सभी पर हमने विस्तार से बात की। मैंने पहले भी कहा है कि यह युद्ध का समय नहीं है। समस्याओं का समाधान रणभूमि में नहीं हो सकता । कहीं भी हो, मासूम बच्चों की मौत स्वीकार्य नहीं है। हम शांति और स्थिरता को जल्द से जल्द बहाली के लिए वार्ता और कूटनीति पर जोर देते हैं। इसके लिए हम दोनों मिलकर हर संभव सहयोग देने के लिए तैयार हैं । पीएम मोदी ने आगे कहा, 'मुझे खुशी है कि मेरे तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही मुझे ऑस्ट्रिया आने का मौका मिला। मेरी यह यात्रा ऐतिहासिक और विशेष है। 41 वर्ष के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री का ऑस्ट्रिया का दौरा है। यह भी सुखद संयोग है कि यह यात्रा उस समय हो रही है।

# पाक के नापाक इरादों को तो कुचलना ही होगा

आर.के. सिन्हा

बीती 26 जुलाई को देश ने कारगिल विजय दिवस मनाया। जाहिर है, इस मौके पर उन शूरवीरों को देश ने भारी मन से और कृतज्ञता के भाव से याद किया, जिन्होंने देश के लिए अपनी जानों का नजराना दिया था। कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर बीते शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लद्दाख में 1999 की जंग के नायकों को श्रद्धांजलि दी। वे कारगिल वॉर मेमोरियल भी गए। करीब 20 मिनट के संबोधन में प्रधानमंत्री जी ने कहा- पाकिस्तान प्रॉक्सी वॉर के जरिए चर्चा में बना रहना चाहता है। उन्होंने अपने इतिहास से कुछ नहीं सीखा। अतीत में आतंकवाद को लेकर उनके हर प्रयास विफल रहे। मैं जहां खड़ा हूं, वहां से आतंक के आकाओं तक मेरी आवाज पहुंच ही रही होगी। उनके मंसूबे कभी कामयाब नहीं होंगे। भारत और पाकिस्तान के बीच कारगिल युद्द परमाणु युद्ध के खतरे के साये में लड़ा गया था। अब यह स्थापित हो चुका है कि जनरल परवेज मुशर्रफ की अगुवाई में पाकिस्तानी सेना ने भारत को युद्ध में धकेला था। उन्होंने नियंत्रण रेखा (एलओसी) के कारगिल क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर चुपके से कब्जा भी कर लिया था, जबकि दोनों देशों के तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व शांति स्थापना के प्रयासों में जुटे थे। इसमें फरवरी 1999 में लाहौर घोषणा पर हस्ताक्षर भी शामिल था। तमाम जटिल बाधाओं के बावजूद, भारतीय सेना और वायु सेना ने एक ऐसा अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों के वेश में पाकिस्तानी नियमित सैनिकों को खदेड़ दिया गया। भारतीय सैनिकों ने बलपूर्वक अपनी एक-एक इंच जमीन को भी वापस लिया। जबकि, वायु सेना ने दुश्मन की लॉजिस्टिक सुविधाओं और पहाड़ी किलों को निशाना बनाया। कारगिल में बुरी तरह मार खाने के बाद भी पाकिस्तान सुधरा नहीं। पाकिस्तान की सेना और खुफिया एजेंसी आईएसआई ने कारगिल से मिले सबक का इस्तेमाल अन्य अपरंपरागत अभियानों को अंजाम देने के लिए किया, जिसमें 2008 के मुंबई हमले, 2016 में पठानकोट और उरी में सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमले और 2019 का पुलवामा आत्मघाती हमला भी शामिल हैं। इन हमलों में पाकिस्तान के सुरक्षा प्रतिष्ठानों की भूमिका साफ नजर आ रही थी। कारगिल और उसके बाद के घटनाक्रमों से साफ था कि पाकिस्तानी सेना ही अपने राजनेताओं द्वारा किये जा रहे शांति के प्रयासों को विफल कर रही है। कारगिल युद्ध के बाद ही परवेज मुशर्रफ राजधानी दिल्ली आए। वे पाकिस्तान की संभवतः पहली बड़ी शख्सियत थे, जो महात्मा गांधी की समाधि राजघाट में पहुंचे थे। यह 17 जुलाई, 2001 की बात है। वे जब भारत आए तब उन्हें सारा भारत कारगिल की जंग की इबारत लिखने वाला ही मानता था। जाहिर है कि इसी कारण उनसे देश नाराज था। बेशक, मुशर्रफ ने अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को परवान चढ़ाने के लिए कारगिल का युद्ध छेड़ा था। उस समय वह पाकिस्तान आर्मी के चीफ थे। अपनी आत्मकथा 'इन द लाइन ऑफ फायर' में उन्होंने लिखा है कि पाकिस्तानी सेना कारगिल युद्ध में शामिल थी। हालांकि, इससे पहले पाकिस्तान इस तथ्य को छिपाता और झुठलाता ही रहा था। दिल्ली में 1943 में जन्में मुशर्रफ ने हार की शर्मिंदगी से बचने के लिए पूरी जिम्मेदारी तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ पर डाल दी थी। चूंकि दिल्ली उनका जन्म स्थान था, इसलिए उनकी उस पहली भारत यात्रा को लेकर जिज्ञासा का भाव भी था। वे जब इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर उतरे तो राजधानी दिल्ली में झमाझम बारिश हो रही थी। उनका राजधानी में पहला अहम कार्यक्रम राजघाट में जाकर महात्मा गांधी को श्रद्लांजलि देना था। वे जब राजघाट पहुंचे तब भी बारिश ने उनका पीछा नहीं छोड़ा था। खबरिया चैनलों से दिखाई जाने वाली तस्वीरों से साफ लग रहा था कि वे राजघाट में बेहद तनाव में थे। उन्होंने वहां पर विजिटर्स बुक में लिखा- "महात्मा गांधी जीवनभर शांति के लिए कोशिशें करते रहे।" कुछ ग्राफोलोजिस्ट ( हैंड राइटिंग के विशेषज्ञों) ने परवेज मुर्शरफ की हैंड राइटिंग का अध्ययन करने के बाद दावा किया था कि मुशर्रफ के राजघाट पर विजिटर्स बुक पर लिखते वक्त हाथ कांप रहे थे और वे तनाव में थे। दरअसल युद्ध हथियारों से ज्यादा हौसलों से लड़े जाते हैं। यह देश ने कारगिल के समय देखा था। सेना तो लड़ती ही है, उसे सारे देश का साथ भी मिलना चाहिए। कारगिल में पाकिस्तान के छल से सारा देश गुस्से में था। कारगिल एक ऐसा युद्ध था जो विश्व की सबसे मुश्किल लड़ाइयों में से एक माना जाता है। भारत के वीर योद्धाओं ने दुश्मन पाकिस्तान को दुर्गम पहाड़ियों की चोटियों से खदेड़ दिया था। हालांकि कारगिल की जंग को जीतने के लिए हमारे लगभग साढ़े पांच सौ शूरवीरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया था। उनमें परमवीर चक्र विजेता कैप्टन विक्रम बत्रा भी थे। कैप्टन विक्रम बत्रा ने साहस और शौर्य की लंबी रेखा खींची थी। दुश्मन उनके नाम से कांपते थे। विक्रम ने जुलाई 1996 में भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून में प्रवेश लिया। दिसंबर 1997 में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उन्हें 6 दिसम्बर 1997 को जम्मू के सोपोर में सेना की 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्ति मिली। उन्होंने 1999 में कमांडो ट्रेनिंग के साथ कई प्रशिक्षण भी लिए। पहली जून 1999 को उनकी टुकड़ी को कारगिल युद्ध में भेजा गया। हम्प व राकी नाब स्थानों को जीतने के बाद विक्रम को कैप्टन बना दिया गया। इसके बाद श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्त्वपूर्ण 5140 चोटी को पाक सेना से मुक्त करवाने की ज़िम्मेदारी कैप्टन बत्रा की टुकड़ी को मिली। कैप्टन बत्रा अपनी कंपनी के साथ घूमकर पूर्व दिशा की ओर से इस क्षेत्र की तरफ बढ़े और बिना शत्रु को भनक लगे हुए उसकी मारक दूरी के भीतर तक पहुंच गए। कैप्टन बत्रा ने अपने दस्ते को पुर्नगठित किया और उन्हें दुश्मन के ठिकानों पर सीधे आक्रमण के लिए प्रेरित किया। सबसे आगे रहकर दस्ते का नेतृत्व करते हुए उन्होंने बड़ी निडरता से शत्रु पर धावा बोल दिया और आमने-सामने की लड़ाई में शत्रु सेना के चार जवानों को मार डाला। बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बावजूद विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह तीन बजकर 30 मिनट पर इस चोटी को अपने कब्ज़े में ले लिया।कैप्टन विक्रम बत्रा ने जब इस चोटी से रेडियो के जरिए अपना विजय उद्घोष 'यह दिल मांगे मोर' कहा तो सेना ही नहीं बल्कि पूरे भारत में उनका नाम छा गया। इसी दौरान विक्रम के कोड नाम शेरशाह के साथ ही उन्हें 'कारगिल का शेर' कहा जाने लगा। कारगिल में कैप्टन विक्रम बत्रा जैसा पराक्रम सारे भारतीय सैनिकों ने दिखाया था। बेशक, कारगिल की हार से पाकिस्तान की आंखें नहीं खुलीं। वह अब भी भारत के खिलाफ रणनीति बनाता ही रहता है। भारत को उसकी नापाक हरकतों पर हर वक्त पैनी नजर तो रखनी ही होगी।

# सर्कैडियन रिदम को समझ बनें ऊर्जावान

डॉ. आरबी चौधरी

ऊर्जावान बने रहने के साथ-साथ वजन घटाने के लिए टहलना मजेदार और सुलभ तरीका है। बस आप अपने अंदर के घड़ी की आवाज को सुनिए और उसी अनुसार से चलिए । टहलते समय आप जो भी कदम उठाते हैं, उससे न केवल कैलोरी बर्न होती है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा होता है। चाहे सुबह की तेज सैर हो या शाम की आरामदायक सैर, हर हरकत मायने रखती है। टहलने की खूबसूरती और सहजता इसकी सादगी में निहित है - आप आज से ही शुरुआत कर सकते हैं, इसके लिए किसी खास उपकरण की जरूरत नहीं है। अधिक सोचिए नहीं बस , अपने जूते बांधें और बाहर निकलें । हर कदम आपको ऊर्जावान बनाए रखते हुए आपके वजन घटाने के लक्ष्य के करीब ले जाएगा। जब टहलने के जरिए अपने वजन घटाने के लक्ष्य को हासिल करने की बात आती है तो आपको मनाना होगा कि सुबह या शाम को टहलना अत्यंत फायदेमंद है। दोनों ही समय के अपने-अपने अनूठे फायदे हैं और वजन घटाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, लेकिन सबसे अच्छा विकल्प आपकी व्यक्तिगत प्राथमिकता, जीवनशैली और व्यायाम के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। सुबह टहलने से आपका मेटाबॉलिज्म शुरू होता है और आपकी आंतरिक घड़ी नियंत्रित होती है। सुबह टहलने से दिन की एक नई शुरुआत होती है, एक सकारात्मक स्वर सेट होता है और शुरुआत से ही आपका मेटाबॉलिज्म बढ़ता है। दिन की शुरुआत तेज गति से चलने से हृदय गति बढ़ सकती है और आपका मेटाबॉलिज्म शुरू हो सकता है, जिसका मतलब है कि आप पूरे दिन तेज गति से कैलोरी बर्न करते रहेंगे। यह शुरुआती बढ़ावा न केवल कैलोरी बर्न करने में मदद करता है बल्कि आपके मूड और ऊर्जा के स्तर को भी बेहतर बनाता है, जिससे आपका दिन उत्पादक बनता है। सुबह टहलने से आपकी व्यायाम दिनचर्या का बेहतर पालन हो सकता है, जब आप सबसे पहले टहलते हैं, तो दिन की अप्रत्याशित मांगों से बाधित होने की संभावना कम होती है। सुबह की सैर से न केवल शारीरिक लाभ होते हैं, बल्कि यह आपके सर्कैडियन रिदम पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। सुबह जल्दी शारीरिक गतिविधि करके, आप अपने शरीर की आंतरिक घड़ी को विनियमित करने में मदद कर सकते हैं, जिससे नींद के पैटर्न में सुधार होता है और समग्र स्वास्थ्य बेहतर होता है। इससे रात में अधिक आरामदायक नींद आती है, जो वजन प्रबंधन और समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यह जानना जरूरी है कि सर्कैडियन सर्कैडियन रिदम (लय) आखिर है क्या, शरीर में एक प्राकृतिक और स्वचालित घड़ी है जो हमें बताती है कि कब सोना है, कब जागना है, और कब खाना है। यह घड़ी हमारे मस्तिष्क के एक क्षेत्र में स्थित होती है जिसे हाइपोथैलेमस कहते हैं। हाइपोथैलेमस के अंदर कोशिकाओं के एक छोटे समूह को सुप्राचियास्मैटिक न्यूक्लियस कहते हैं जो सर्कैडियन लय को नियंत्रित करता है। यह घड़ी बाहरी संकेतों जैसे सूरज की रोशनी और तापमान से प्रभावित होती है। सर्कैडियन लय के कारण ही हम दिन के अलग-अलग समय पर ऊर्जावान या थका हुआ महसूस करते हैं। सर्कैडियन लय के सही होने से हमें अच्छी नींद मिलती है और हम स्वस्थ और ऊर्जावान रहते हैं। इसके अतिरिक्त, सुबह का ठंडा तापमान आपकी सैर को अधिक आरामदायक बना सकता है, खासकर गर्मियों के महीनों में। ताजी हवा, व्यायाम और सुबह की प्राकृतिक रोशनी का संयोजन आपके शरीर और दिमाग को स्फूर्ति प्रदान कर सकता है, जिससे दिन के बाकी समय के लिए सकारात्मक माहौल बनता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इन लाभों को प्राप्त करने और अपने दिन की सही शुरुआत करने के लिए अपनी दिनचर्या में सुबह की सैर को शामिल करने की सलाह देते हैं। चाहे वह आपके आसपास की तेज सैर हो या पास के पार्क में आराम से टहलना, सुबह अपने शरीर को हिलाने के लिए समय निकालना आपके स्वास्थ्य और स्वास्थ्य पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। शाम को टहलने से तनाव कम होता है। शाम को टहलने के अपने फायदे हैं। काम या अन्य गतिविधियों के दिन के बाद, शाम की सैर तनाव दूर करने और तनाव दूर करने का एक शानदार तरीका हो सकता है। काम के बाद की यह सैर दिन भर के तनाव को दूर करने और मानसिक तौर पर सुकून प्रदान करता है, जिससे यह दिन की व्यस्तता से शाम को अधिक आराम से बिताने का एक बेहतरीन तरीका बन जाता है। कुछ लोगों के लिए, दिन में बाद में व्यायाम करना उनके प्राकृतिक ऊर्जा स्तरों के साथ बेहतर तालमेल बिठाता है, जिससे अधिक जोरदार या लंबी सैर करने की अनुमति मिलती है जो वजन घटाने के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकता है। फिट और स्वस्थ रहने के लिए एक दिन में आदर्श रूप से कितना चलना चाहिए? इसके अलावा, शाम की सैर पाचन में सहायता कर सकती है और देर रात को नाश्ता करने से रोक सकती है। रात के खाने के बाद आराम से टहलने से आपके शरीर को भोजन को पचाने में मदद मिलती है और सोने से पहले अस्वास्थ्यकर स्नैक्स खाने की इच्छा कम हो सकती है। जिन लोगों को सुबह समय निकालने में कठिनाई होती है या दिन की शुरुआत में सुस्ती महसूस होती है, उनके लिए शाम की सैर एक सिर्फ महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि व्यावहारिक विकल्प है। जैसे-जैसे सूरज ढलता है और तापमान गिरता है, शाम की हवा ठंडी और अधिक सुखद हो सकती है, जिससे आपका चलने का अनुभव बेहतर हो सकता है। सुबह और शाम दोनों तरह की सैर वजन घटाने के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती हैं, लेकिन दोनों की प्रभावशीलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि यह आपकी दिनचर्या में कितनी अच्छी तरह फिट बैठती है और आपका शरीर इस पर कैसी प्रतिक्रिया देता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसा समय चुनें जो आपके व्यक्तिगत शेड्यूल, ऊर्जा के स्तर और जीवनशैली के साथ संरेखित हो। यदि आप सुबह उठने वाले व्यक्ति हैं और दिन की शांत शुरुआत का आनंद लेते हैं और सुबह जल्दी उठकर दिनचर्या का पालन करना आसान पाते हैं तो सुबह की सैर आपके लिए आदर्श विकल्प हो सकती है। इसके विपरीत यदि आप दिन के अंत में अधिक ऊर्जावान महसूस करते हैं और शाम की सैर को अपने दिन का अधिक आरामदायक अंत पाते हैं, तो यह आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। ध्यान देने की जरूरत है कि वजन घटाने के लिए नियमितरूप से टहलना महत्वपूर्ण है। चाहे आप सुबह या शाम को टहलना चुनें, सबसे महत्वपूर्ण कारक नियमित रूप से टहलने की दिनचर्या बनाए रखना है। अपने दैनिक जीवन में टहलना शामिल करना, संतुलित आहार और स्वस्थ जीवनशैली विकल्पों के साथ, आपको अपने दिन में सबसे अच्छे परिणाम मिलेंगे। टहलने के लिए सबसे प्रभावी समय वह है जो आपके दैनिक जीवन में सहजता से फिट बैठता है और आपको अच्छा महसूस कराता है। चाहे वह सुबह की मीठी हवा हो या शाम की शांत हवा, मुख्य बात यह है कि टहलना आपकी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बन जाए। तो, अपने चलने के जूते पहने और चलना शुरू करें। आपका शरीर इसके लिए आपको धन्यवाद देगा।

**मेष राशिः** आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। अपने बिजनेस को बढ़ाने के लिए आपको नये अवसर मिलेंगे। किसी को उधार दिया हुआ पैसा आज आपको अचानक वापस मिल सकता है। व्यापार में किसी व्यक्ति से फायदा मिलने की उम्मीद बढ़ेगी। भाई-बहनों से आपको सहयोग मिलेगा। पहले शुरू किये गये ज्यादातर काम आज पूरे होंगे। रिश्तों में हो रही गलतफहमियां आज खत्म होंगी, जिससे आपके रिश्ते में मिठास बढ़ेगी।

**वृष राशिः** आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। आपकी योजनाओं के अनुसार, सभी काम होने से आपका मन काम में लगा रहेगा। सामाजिक कामों में आपकी रूचि बढ़ सकती है। आपको जीवनसाथी से काम में पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। व्यापार में साझेदारी से आपको लाभ हो सकता है। आप चीजों को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करेंगे।

**मिथुन राशिः** आज आपका दिन अच्छे मूड से शुरू होने वाला है। कुछ दिनों से चल रही किसी दोस्त से अनबन आज ख़त्म होगी। राजनीति व सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों के लिए दिन फेवरेबल रहेगा। महिलाओं के लिए दिन शानदार रहेगा। बिजनेस मैन आज कोई जरुरी मीटिंग अटेंड कर सकते हैं। आज किसी स्वास्थ्य संबंधी समस्या से आपको राहत मिलेगी।

**कर्क राशिः** आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। इस राशि के स्टूडेंट्स का दिन राहत भरा होगा नया शेड्यूल बनाने का भी विचार कर सकते हैं। आज ऑफिस में फ़ोन का इस्तेमाल कम से कम करेंगे और अपने काम पर पूरा फोकस करेंगे। पैसों के मामलों में लोगों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने से बचना चाहिए। आज जीवनसाथी के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करने का प्लान कर सकते हैं।

**सिंह राशिः** आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आपकी पहले से चली आ रही समस्याओं का समाधान मिलेगा, जिससे आपका मन प्रसन्न होगा। परिवार में धार्मिक अनुष्ठान की योजना बन सकती है। आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ अच्छे बदलाव करने की कोशिश करेंगे। आपके व्यवहार में अच्छे बदलाव आने से आपके कुछ नए दोस्त बन सकते हैं।

**कन्या राशिः** आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। आज आपको किस्मत का साथ मिलने से कार्यों को पूरा करने में सफल होंगे। ऑफिस में किसी काम को लेकर विचार-विमर्श करना पड़ सकता है। इस राशि के जो लोग मल्टीनेशनल कंपनी में काम करते हैं, उनके लिए आज का दिन बेहद खास है। जीवन में चल रही सभी परेशानियां जल्द दूर होगी।

**तुला राशिः** आज आपका दिन उत्साह से भरा रहने वाला है। आज बिजनेस में आपको बड़ा धन लाभ होगा। शत्रु पक्ष आज आपसे दूरियां बनाकर रहेंगे। राइटर आज कोई नई स्टोरी लिख सकते हैं जिसे लोगों द्वारा खूब पसंद किया जायेगा। परिवार में नए सदस्य के जुड़ने से सभी लोग बहुत खुश होंगे। इस राशि के जो लोग पेंटिंग्स बनाने का काम करते हैं उनकी कोई पेंटिंग बड़े एक्सिबिसन में लगाई जा सकती है जहाँ लोगों द्वारा खूब सराहना मिलेगी।

**वृश्चिक राशिः** आज का दिन आपके अनुकूल रहने वाला है। अगर किसी बिजनेस ट्रिप के लिए आप बाहर जा रहे हैं, तो घर के बड़े-बुजुर्ग का आशीर्वाद लेकर जाएं। आपका काम सफल होगा। आज आपके जीवनसाथी को तरक्की का अच्छा अवसर मिलेगा। कूरियर का बिज़नेस कर रहे कारोबारियों को आज फायदा होगा।

**धनु राशिः** आज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। आज आप अपने मन की बात किसी खास मित्र से शेयर करेंगे। परिवार वालों के साथ बाहर मूवी का प्लान बन सकता है। दोस्त की बर्थ-डे पार्टी मे जाएंगे जहां बाकी दोस्तों के साथ एंजॉय करने का मौका मिलेगा। कोई नई स्किल सीख सकते हैं जिसका लाभ आपको भविष्य में जरूर मिलेगा।

**मकर राशिः** आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। एकाग्र मन से किया गया काम लाभदायक साबित होगा। लवमेट के लिए आज का दिन बढ़िया है। साथ ही किसी अच्छे रेस्टोरेन्ट में भी जा सकते हैं। किसी जिम्मेदारी को अनदेखा करने से आपको बचना चाहिए।

**कुंभ राशिः** आज आपका दिन पहले की अपेक्षा अच्छा रहेगा। आप परिवार वालों के साथ क्वालिटी टाइम स्पेंड करेंगे साथ ही जीवनसाथी के साथ आपकी लंबी बातचीत हो सकती है, इससे आपके रिश्ते बेहतर होंगे। दोस्तों के साथ घर पर ही मूवी देखने की प्लानिंग कर सकते हैं। क

**मीन राशिः** आज आपका दिन नई उमंगो के साथ शुरू होने वाला है। आपका अच्छा व्यवहार समाज में अलग पहचान बनाने में मदद करेगा। घर पर डेकोरेशन का काम करवा सकते हैं। कॉन्ट्रैक्टर्स के लिए आज का दिन धन लाभ देने वाला है। आज अपने डेली रूटीन में कुछ बदलाव कर सकते हैं।

## शब्द सामर्थ्य -135

( भागवत साहू )

**बाएं से दाएं :**
1. अनुचित, असत्य, जो ठीक न हो 3. बेवजह, बिनाकारण, व्यर्थ 4. हल्कीनींद, चकमा, धोखा 6. शक्कर पानी आदि का मीठा घोल 10. सोते से उठाना, सावधान करना, प्रदीप्त करना 11. चरमसीमा, सीमांत 14. पानी, आंसू 15. बैठा हुआ, विराजित 16. नृत्य 17. मृतप्राय, मृत्यु के करीब 19. जल, अम्बु 22. उपहार, भेंट 23. खबर, संदेश।

**ऊपर से नीचे**
1. गणपतिजी, मांगनेवाला, पाने की इच्छा करने वाला 3. मिट्टी के रंग का, मटमैला 5. चला आता हुआ क्रम प्रथा, प्रणाली, रीति-रीवाज, 7. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 8. पेड़ का धड़ा जहां से शाखाएं निकलती है, 9. मिठाई, खाने की मीठी चीज 12. शासन, गुसबात 13. श्रद्धा, स्त्री, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 15. विपत्तिग्रस्त, दुखी, अभागा 16. प्रसिद्ध, नामवर 18. स्वप्न, ख्वाब 20. करीब, नजदीक, समीप 21. सुबह, प्रातः, सबेरा।

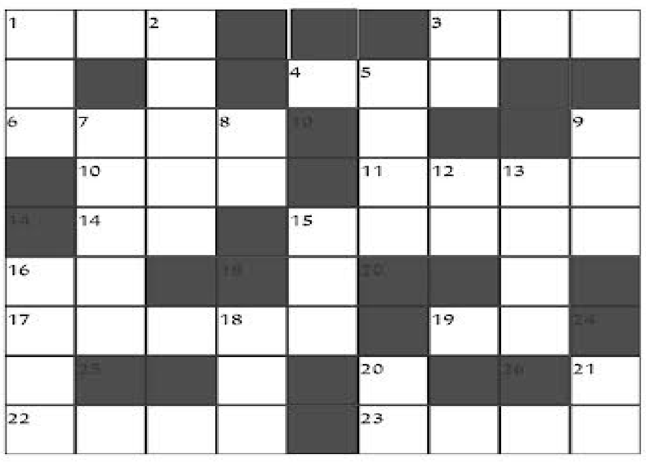

**शब्द सामर्थ्य क्रमांक 134 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | भि | षे | क | | प | स | | |
| जा | त | | थ | प | थ | पा | ना | |
| य | र | का | नी | | भ्र | | र | श्मि |
| ब | घा | र | | क | ष्ट | प्र | द | |
| | त | ना | त | नी | | र्व | | ब |
| अ | | मा | | ज | मा | त | | ल |
| स | जा | | | | | क | ज | रा |
| बा | | बे | स | हा | रा | | ग | म |
| ब | गु | ला | | रा | ज | दू | त | |

## सूडोकु नवताल- 7144

★★★★☆ कठिन

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | | | | | 1 | 9 | | |
| | | | | | | 8 | 5 | |
| | | | 7 | 3 | | | | |
| | | | 3 | | | | 4 | 7 |
| 9 | | | | | | | | 2 |
| 8 | 5 | | | | 6 | | | |
| | | | | 5 | 8 | | | |
| | 7 | 4 | | | | | | |
| | | 6 | 2 | | | | | 5 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

**सूडोकु नवताल -7143 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 4 | 5 | 6 | 9 | 8 | 1 | 7 | 3 |
| 1 | 7 | 6 | 4 | 3 | 5 | 8 | 2 | 9 |
| 3 | 8 | 9 | 1 | 2 | 7 | 6 | 5 | 4 |
| 9 | 1 | 7 | 3 | 6 | 2 | 4 | 8 | 5 |
| 5 | 6 | 3 | 8 | 7 | 4 | 9 | 1 | 2 |
| 4 | 2 | 8 | 5 | 1 | 9 | 3 | 6 | 7 |
| 7 | 3 | 1 | 9 | 5 | 6 | 2 | 4 | 8 |
| 8 | 9 | 2 | 7 | 4 | 1 | 5 | 3 | 6 |
| 6 | 5 | 4 | 2 | 8 | 3 | 7 | 9 | 1 |

प्रकाशक एवं स्वामी सागर सूरज, द्वारा सरोतर निवास, राजाबाजार-कचहरी रोड, मोतिहारी, बिहार-845401 से प्रकाशित व प्रकाश प्रेस मोतिहारी से मुद्रित, संपादक-सागर सूरज* फोन न.9470050309 प्रसारः-9931408109 ईमेलः-bordernewsmirror@gmail.com वेबसाइटः-bordernewsmirror.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) RNI. N. BIHBIL/2022/88070

# मोहिनी एकादशी
## यानि मोहजाल से छुटकारा

मोहनी एकादशी याने मोहजाल से छुटकारा! मोहनी एकादशी व्रत बहुत उत्तम व्रत है इसे पढ़ने या सुनने मात्र से ही सहस्त्र गोदान का फल मिलता है, यह वृत वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को आता है इसे ही मोहनी एकादशी कहा जाता है। मोहनी एकादशी व्रत तिथी सभी पापों को हरने वाली और उत्तम है। इस दिन जो व्रत रहता है, वह व्रत के प्रभाव से मोहजाल व पातक समूह से छुटकारा पा जाता है।

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को मोहिनी एकादशी कहते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह तिथी सब पापों को हरनेवाली और उत्तम है । इस दिन जो व्रत रहता है उसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोहजाल तथा पातक समूह से छुटकारा पा जाते हैं। इस तिथि और व्रत के विषय में एक कथा कही जाती है। सरस्वती नदी के रमणीय तट भद्रावती नाम की सुंदर नगरी है। वहां धृतिमान नामक राजा, जो चन्द्रवंश में उत्पन और सत्यप्रतिज्ञ थे, राज्य करते थे । उसी नगर में एक वैश्य रहता था जो धनधान्य से परिपूर्ण समृद्धिशाली था, उसका नाम था धनपाल वह सदा पुन्यकर्म में ही लगा रहता था दूसरों के लिए पौसला (प्याऊ), कुआँ, मठ, बगीचा, पोखरा और घर बनवाया करता था। भगवान विष्णु की भक्ति में उसका हार्दिक अनुराग था। उसके पाँच पुत्र थे। सुमना, द्युतिमान, मेधावी, सुकृत तथा धृष्टबुद्धि। धृष्टबुद्धि पांचवा था। वह सदा बड़े-बड़े पापों में संलग्न रहता था। जुये आदि दुर्व्यसनों में उसकी बड़ी आसक्ति थी। वह वेश्याओं से मिलने के लिये लालायित रहता और अन्याय के मार्ग पर चलकर पिता का धन बरबाद किया करता। एक दिन उसके पिता ने तंग आकर उसे घर से निकाल दिया और वह दर दर भटकने लगा। इसी प्रकार भटकते हुए भूख-प्यास से व्याकुल वह महर्षि कौन्डिन्य के आश्रम जा पहुँचा। शोक के भार से पीड़ित वह मुनिवर कौन्डिन्य के पास गया और हाथ जोड़ कर बोला ब्रह्मन ! द्विजश्रेष्ट ! मुझ पर दया करके कोई ऐसा व्रत बताइये, जिसके पुण्य के प्रभाव से मेरी मुक्ति हो। कौन्डिन्य बोले - वैशाख के शुक्ल पक्ष में मोहिनी नाम से प्रसिद्द एकादशी का व्रत करो। मोहिनी को उपवास करने पर प्राणियों के अनेक जन्मों के किए हुए मेरु पर्वत जैसे महापाप भी नष्ट हो जाते हैं। मुनि का यह वचन सुनकर धृष्टबुद्धि का चित्त प्रसन्न हो गया। उसने कौन्डिन्य के उपदेश से विधिपूर्वक मोहिनी एकादशी का व्रत किया। इस व्रत के करने से वह निष्पाप हो गया और दिव्य देह धारण कर गरुड़ पर आरूढ़ हो सब प्रकार के उपद्रवों से रहित श्रीविष्णुधाम को चला गया। इस प्रकार यह मोहिनी का व्रत बहुत उत्तम है। इसके पढने और सुनने से सहस्त्र गोदान का फल मिलता है।

### श्री हनुमान की ऐसी शक्ति के आगे

# शनि भी होते हैं नतमस्तक

रुद्राक्ष शिव का अंश माना गया है। धार्मिक मान्यताओं में इसकी उत्पत्ति भी शिव के आंसुओं से मानी गई है। रुद्र और अक्ष यानी आंसु शब्द को मिलाकर इसे रुद्राक्ष पुकारा जाता है। शिव का अंश होने से ही यह सांसारिक पीड़ाओं को दूर करने वाला तो माना ही गया है। साथ ही धर्म और आध्यात्मिक रूप से भी रुद्राक्ष का प्रभाव धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाला होता है। पुराणों में अलग-अलग रूपों और आकार के रुद्राक्ष जगत के लिए संकटमोचक, सुख-सौभाग्य देने वाले और मनोरथ पूरे करने वाले बताए गए हैं। रुद्राक्ष की पहचान उस पर बनी धारियों से होती है। इन धारियों को रुद्राक्ष का मुख मानकर शास्त्रों में एकमुखी से इकीस मुखी रुद्राक्ष का महत्व बताया गया है। इन सभी रुद्राक्ष में अलग-अलग देव शक्तियों का रूप और वास माना गया है। जिनमें बहुत से दुर्लभ हैं। जिनमें चौदह मुखी रुद्राक्ष श्री हनुमान का रूप माना गया है। जिसकी पूजा या धारण करने से श्री हनुमान की शक्तियों का प्रभाव विपत्तियों से बचाने वाला माना गया है। श्री हनुमान भी रुद्रावतार है और रुद्राक्ष भी शिव का वरदान माना गया है। वहीं पौराणिक मान्यताओं में शनि ने शिव कृपा से ही शक्ति और ऊंचे पद को पाया। इसलिए माना गया है कि शिव और हनुमान की शक्तियों के आगे शनि भी नतमस्तक रहते हैं। यही कारण है कि शनि साढ़े साती, महादशा या शनि पीड़ा के दौरान चौदह मुखी रुद्राक्ष को पहनना या उसकी उपासना शनि दशा में अनिष्ठ से रक्षा ही नहीं करती, बल्कि सुख-सौभाग्य लाने वाली होती है। चौदहमुखी रुद्राक्ष श्री हनुमान कृपा से उपासक को निडर, ऊर्जावान, निरोगी बनाता है। यह संतान व भूतबाधा दूर करता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक इसके गुण व शुभ प्रभाव अनंत है। यह स्वर्ग के सुख के साथ ही शनि पीड़ा जैसे क्रूर देवीय प्रकोप से भी बचाता है।

इन सभी रुद्राक्ष में अलग-अलग देव शक्तियों का रूप और वास माना गया है। जिनमें बहुत से दुर्लभ हैं। जिनमें चौदह मुखी रुद्राक्ष श्री हनुमान का रूप माना गया है। जिसकी पूजा या धारण करने से श्री हनुमान की शक्तियों का प्रभाव विपत्तियों से बचाने वाला माना गया है। श्री हनुमान भी रुद्रावतार है और रुद्राक्ष भी शिव का वरदान माना गया है। वहीं पौराणिक मान्यताओं में शनि ने शिव कृपा से ही शक्ति और ऊंचे पद को पाया। इसलिए माना गया है कि शिव और हनुमान की शक्तियों के आगे शनि भी नतमस्तक रहते हैं। यही कारण है कि शनि साढ़े साती, महादशा या शनि पीड़ा के दौरान चौदह मुखी रुद्राक्ष को पहनना या उसकी उपासना शनि दशा में अनिष्ट से रक्षा ही नहीं करती, बल्कि सुख-सौभाग्य लाने वाली होती है।

## ज्योतिर्मय सूर्य जगत गुरु
# शंकराचार्य

एक बार एक सन्यासी बालक एक ब्राम्हण के यहां भिक्षा मांगने गया। ब्राम्हण की पत्नी ने उस बालक के हाथ में एक आंवला रख दिया और अपने घर की सारी व्यथा बता दी। बालक ब्राम्हण पत्नी की व्यथा सुन व्याकुल हो उठा और उसने उसी क्षण ब्राम्हण के लिए प्रार्थना की। बालक की प्रार्थना सुन महालक्ष्मी ने उस ब्राम्हण के यहां सोने का आंवलों के बरसात कर दी। यह बालक दक्षिण के कालाड़ी ग्राम में जन्मा वह बालक था, नाम था शंकर, जो आगे चलकर जगद्गुरु शंकराचार्य के नाम से विख्यात हुआ।

एक सन्यासी बालक, जिसकी आयु मात्र 7 वर्ष था, गुरुगृह के नियमानुसार एक ब्राम्हण के घर भिक्षा माँगने पहुँचा। उस ब्राम्हण के घर में भिक्षा देने के लिए अन्न का दाना तक न था। ब्राम्हण पत्नी ने उस बालक के हाथ पर एक आँवला रखा और रोते हुए अपनी विपन्नता का वर्णन किया। उसकी ऐसी अवस्था देखकर उस प्रेम-दया मूर्ति बालक का ह्रदय द्रवित हो उठा। वह अत्यंत आर्त स्वर में माँ लक्ष्मी का स्तोत्र रचकर उस परम करुणामयी से निर्धन ब्राम्हण की विपदा हरने की प्रार्थना करने लगा। उसकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर माँ महालक्ष्मी ने उस परम निर्धन ब्राम्हण के घर में सोने के आँवलों की वर्षा कर दी। जगत जननी महालक्ष्मी को प्रसन्न कर उस ब्राम्हण परिवार की दरिद्रता दूर करने वाला, दक्षिण के कालाड़ी ग्राम में जन्मा वह बालक था- शंकर, जो आगे चलकर जगद्गुरु शंकराचार्य के नाम से विख्यात हुआ। इस महाज्ञानी शक्तिपुंज बालक के रूप में स्वयं भगवान शंकर ही इस धरती पर अवतीर्ण हुए थे। इनके पिता शिवगुरु नामपुद्रि के यहाँ विवाह के कई वर्षों बाद तक जब कोई संतान नहीं हुई, तब उन्होंने अपनी पत्नी विशिष्टादेवी के साथ पुत्र प्राप्ति की कामना से दीर्घकाल तक चंद्रमौली भगवान शंकर की कठोर आराधना की। आखिर प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए और कहा- वर माँगो। शिवगुरु ने अपने इष्टप्रभु से एक दीर्घायु सर्वज्ञ पुत्र माँगा। भगवान शंकर ने कहा- वत्स, दीर्घायु पुत्र सर्वज्ञ नहीं होगा और सर्वज्ञ पुत्र दीर्घायु नहीं होगा। बोलो तुम कैसा पुत्र चाहते हो? तब धर्मप्राण शास्त्रसेवी शिवगुरु ने सर्वज्ञ पुत्र की याचना की। औढरदानी भगवान शिव ने पुन: कहा- वत्स तुम्हें सर्वज्ञ पुत्र की प्राप्ति होगी। मैं स्वयं पुत्र रूप में तुम्हारे यहाँ अवतीर्ण होऊँगा। कुछ समय के पश्चात ई. सन 686 में वैशाख शुक्ल पंचमी (कुछ लोगों के अनुसार अक्षय तृतीया) के दिन मध्याह्नकाल में विशिष्टादेवी ने परम प्रकाशरूप अति सुंदर, दिव्य कांतियुक्त बालक को जन्म दिया। देवज्ञ ब्राम्हणों ने उस बालक के मस्तक पर चक्र चिह्न, ललाट पर नेत्र चिह्न तथा स्कंध पर शूल चिह्न परिलक्षित कर उसे शिवावतार निरूपित किया और उसका नाम शंकर रखा। इन्हीं शंकराचार्यजी को प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ल पंचमी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए श्री शंकराचार्य जयंती मनाई जाती है। जिस समय जगद्गुरु शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ, उस समय भारत में वैदिक धर्म म्लान हो रहा था तथा मानवता बिसर रही थी, ऐसे में आचार्य शंकर मानव धर्म के भास्कर प्रकाश स्तंभ बनकर प्रकट हुए। मात्र 32 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने सनातन धर्म को ऐसी ओजस्वी शक्ति प्रदान की कि उसकी समस्त मूर्छा दूर हो गई। शंकराचार्यजी तीन वर्ष की अवस्था में मलयालम का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर चुके थे। इनके पिता चाहते थे कि ये संस्कृत का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। परंतु पिता की अकाल मृत्यु होने से शैशवावस्था में ही शंकर के सिर से पिता की छत्रछाया उठ गई और सारा बोझ शंकरजी की माता के कंधों पर आ पड़ा। लेकिन उनकी माता ने कर्तव्य पालन में कमी नहीं रखी॥ पाँच वर्ष की अवस्था में इनका यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर वेदों का अध्ययन करने के लिए गुरुकुल भेज दिया गया। ये प्रारंभ से ही प्रतिभा संपन्न थे, अत: इनकी प्रतिभा से इनके गुरु भी बेहद चकित थे। अप्रतिम प्रतिभा संपन्न श्रुतिधर बालक शंकर ने मात्र 2 वर्ष के समय में वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथ कंठस्थ कर लिए। तत्पश्चात गुरु से सम्मानित होकर घर लौट आए और माता की सेवा करने लगे। उनकी मातृभक्ति इतनी विलक्षण थी कि उनकी प्रार्थना पर आलवाई (पूर्णा) नदी, जो उनके गाँव से बहुत दूर बहती थी, अपना रुख बदल कर कालाड़ी ग्राम के निकट बहने लगी, जिससे उनकी माता को नदी स्नान में सुविधा हो गई। कुछ समय बाद इनकी माता ने इनके विवाह की सोची। पर आचार्य शंकर गृहस्थी के झंझट से दूर रहना चाहते थे। एक ज्योतिषी ने जन्म-पत्री देखकर बताया भी था कि अल्पायु में इनकी मृत्यु का योग है। ऐसा जानकर आचार्य शंकर के मन में संन्यास लेकर लोक-सेवा की भावना प्रबल हो गई थी। संन्यास के लिए उन्होंने माँ से हठ किया और बालक शंकर ने 7 वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण कर लिया। फिर जीवन का उच्चतम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए माता से अनुमति लेकर घर से निकल पड़े।... वे केरल प्रदेश से लंबी पदयात्रा करके नर्मदा तट स्थित ओंकारनाथ पहुँचे। वहाँ गुरु गोविंदपाद से योग शिक्षा तथा अद्वैत ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने लगे। तीन वर्ष तक आचार्य शंकर अद्वैत तत्व की साधना करते रहे। तत्पश्चात गुरु आज्ञा से वे काशी विश्वनाथजी के दर्शन के लिए निकल पड़े। जब वे काशी जा रहे थे कि एक चांडाल उनकी राह में आ गया। उन्होंने क्रोधित हो चांडाल को वहाँ से हट जाने के लिए कहा तो चांडाल बोला- हे मुनि! आप शरीरों में रहने वाले एक परमात्मा की उपेक्षा कर रहे हैं, इसलिए आप अब्राह्मण हैं। अतएव मेरे मार्ग से आप हट जाएँ। चांडाल की देववाणी सुन आचार्य शंकर ने अति प्रभावित होकर कहा-आपने मुझे ज्ञान दिया है, अत: आप मेरे गुरु हुए। यह कहकर आचार्य शंकर ने उन्हें प्रणाम किया तो चांडाल के स्थान पर शिव तथा चार वेदों के उन्हें दर्शन हुए। काशी में कुछ दिन रहने के दौरान वे माहिष्मति नगरी में आचार्य मंडल मिश्र से मिलने गए। आचार्य मिश्र के घर जो पालतू मैना थी वह भी वेद मंत्रों का उच्चारण करती थी। मिश्रजी के घर जाकर आचार्य शंकर ने उन्हें शास्त्रार्थ में हरा दिया। पति आचार्य मिश्र को हारता देख पत्नी आचार्य शंकर से बोलीं- महात्मा! अभी आपने आधे ही अंग को जीता है। अपनी युक्तियों से मुझे पराजित करके ही आप विजयी कहला सकेंगे। तब मिश्रजी की पत्नी शारदा ने कामशास्त्र पर प्रश्न करने प्रारंभ किए। किंतु आचार्य शंकर तो बाल-ब्रह्मचारी थे, अत: काम से संबंधित उनके प्रश्नों के उत्तर कहाँ से देते? इस पर उन्होंने शारदा देवी से कुछ दिनों का समय माँगा तथा पर-काया में प्रवेश कर उस विषय की सारी जानकारी प्राप्त की।

इसके बाद आचार्य शंकर ने शारदा को भी शास्त्रार्थ में हरा दिया।

काशी में प्रवास के दौरान उन्होंने और भी बड़े-बड़े ज्ञानी पंडितों को शास्त्रार्थ में परास्त किया और गुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए। अनेक शिष्यों ने उनसे दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद वे धर्म का प्रचार करने लगे। वेदांत प्रचार में संलग्न रहकर उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना भी की। अद्वैत ब्रह्मवादी आचार्य शंकर केवल निर्विशेष ब्रह्म को सत्य मानते थे और ब्रह्मज्ञान में ही निमग्न रहते थे। एक बार वे ब्रह्म मुहूर्त में अपने शिष्यों के साथ एक अति सँकरी गली से स्नान हेतु मणिकर्णिका घाट जा रहे थे। रास्ते में एक युवती अपने मृत पति का सिर गोद में लिए विलाप करती हुई बैठी थी। आचार्य शंकर के शिष्यों ने उस स्त्री से अपने पति के शव को हटाकर रास्ता देने की प्रार्थना की, लेकिन वह स्त्री उसे अनसुना कर रुदन करती रही। तब स्वयं आचार्य ने उससे वह शव हटाने का अनुरोध किया। उनका आग्रह सुनकर वह स्त्री कहने लगी- हे संन्यासी! आप मुझसे बार-बार यह शव हटाने के लिए कह रहे हैं। आप इस शव को ही हट जाने के लिए क्यों नहीं कहते? यह सुनकर आचार्य बोले- हे देवी! आप शोक में कदाचित यह भी भूल गईं कि शव में स्वयं हटने की शक्ति ही नहीं है। स्त्री ने तुरंत उत्तर दिया- महात्मन्?आपकी दृष्टि में तो शक्ति निरपेक्ष ब्रह्म ही जगत का कर्ता है। फिर शक्ति के बिना यह शव क्यों नहीं हट सकता? उस स्त्री का ऐसा गंभीर, ज्ञानमय, रहस्यपूर्ण वाक्य सुनकर आचार्य वहीं बैठ गए। उन्हें समाधि लग गई।

# आरती के बाद चरणामृत लेना न भूलें क्योंकि...

हिंदू धर्म में भगवान की आरती के पश्चात भगवान का चरणामृत दिया जाता है। इस शब्द का अर्थ है भगवान के चरणों से प्राप्त अमृत। हिंदू धर्म में इसे बहुत ही पवित्र माना जाता है तथा मस्तक से लगाने के बाद इसका सेवन किया जाता है। चरणामृत का सेवन अमृत के समान माना गया है। कहते हैं भगवान श्रीराम के चरण धोकर उसे चरणामृत के रूप में स्वीकार कर केवट न केवल स्वयं भव-बाधा से पार हो गया बल्कि उसने अपने पूर्वजों को भी तार दिया। चरणामृत का महत्व सिर्फ धार्मिक ही नहीं चिकित्सकीय भी है। चरणामृत का जल हमेशा तांबे के पात्र में रखा जाता है। आयुर्वेदिक मतानुसार तांबे के पात्र में अनेक रोगों को नष्ट करने की शक्ति होती है जो उसमें रखे जल में आ जाती है। उस जल का सेवन करने से शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा हो जाती है तथा रोग नहीं होते। इसमें तुलसी के पत्ते डालने की परंपरा भी है जिससे इस जल की रोगनाशक क्षमता और भी बढ़ जाती है। ऐसा माना जाता है कि चरणामृत मेधा, बुद्धि, स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। रणवीर भक्तिरत्नाकर में चरणामृत की महत्ता प्रतिपादित की गई है-अर्थात पाप और रोग दूर करने के लिए भगवान का चरणामृत औषधि के समान है। यदि उसमें तुलसीपत्र भी मिला दिया जाए तो उसके औषधिय गुणों में और भी वृद्धि हो जाती है।

# सिंधु पेरिस ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

## एस्टोनिया की कुउबा को 21-5 और 21-10 से हराया

**पेरिस।** भारत की स्टार खिलाड़ी पीवी सिंधु पेरिस ओलंपिक के महिला एकल बैडमिंटन के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गयी हैं। सिंधु ने एस्टोनिया की क्रिस्टिन कुउबा को 21-5 और 21-10 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनायी। वहीं इससे पहले के मैच में सिंधु ने मालदीव की फथीमथ नब्बाह अब्दुल रज्जाक को आसानी से हराया था। दूसरे मुकाबले में अब सिंधु ने कुउबा को हराया है। सिंधु ने कुउबा के खिलाफ शुरुआत से ही आक्रामक अंदाज में खेला। शुरुआती 5 अंक हासिल करते हुए ही भारतीय खिलाड़ी ने 5-0 की बढ़त हसिल कर ली। सिंधु ने 11-2 की बड़ी बढ़त के साथ ही पहला गेम जीता। 14 मिनट में पहला गेम 21-5 से जीतकर सिंधु ने क्वार्टर फाइनल की ओर कदम बढ़ाये। पहले गेम में मिली हार के बाद कुउबा ने वापसी के प्रयास किये। इस गेम में 7 अंक गंवाने वाली इस खिलाड़ी ने 5 अंक हासिल किए पर अनुभवी सिंधु ने अंत में 15-6 की बढ़त हासिल करते हुए जीत हासिल की। मैच अंक हासिल करने के बाद उन्होंने दो अंक गंवाया लेकिन 21-10 से दूसरा गेम जीतकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनायी। इस प्रकार सिंधु ने ग्रुप एम में जीत से साथ शुरुआम की है। सिंधु ने पहले मुकाबले में फथीमथ को 21-9, 21-6 से हराया था। इस मैच में सिंधु ने महज 27 मिनट में ही जीत हासिल कर ली थी। कुउबा ने भी पहले ग्रुप मुकाबले में फथीमथ के खिलाफ 21–7 और 21–9 से मुकाबला जीता था। महिला एकल में 16 ग्रुप में 48 खिलाड़ियों को रखा गया है।

# पेरिस ओलिंपिक में कंडोम और एंटी सेक्स बेड को लेकर उठा विवाद

**पेरिस।** पेरिस में जारी ओलंपिक खेलों में दुनिया भर के खिलाड़ी पदक की दौड़ में हैं। : दुनिया के दिग्गज एथलीट्स एक ही जगह मौजूद हैं और ऐसे में खिलाड़ियों को किसी भी संक्रमण से बचाने कंडोम दिये गये हैं। एथलीट्स को जो किट दी गयी है। उसमें एक फोन और जरूरी चीजों के अलावा कंडोम के पैकेट्स भी हैं। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार ओलंपिक खेल गांव में तकरीबन 230,000 कंडोम वितरित किए गए हैं। इसी को लेकर विवाद भी हो गया है। इसका कारण है कि खेल गांव में टोक्यो ओलंपिक की तरह ही एंटी-सेक्स कार्डबोर्ड बेड पेरिस में भी एथलीटों को दिए गए हैं दूसरी ओर कंडोम बांटे गये हैं। दुनियाभर के एथलीट इस एंटी सेक्स बेड से परेशान हैं। ऑस्ट्रेलियाई एथलीटों ने इनका जमकर विरोध किया है। उनका कहना है कि पिछले ओलंपिक में भी ये बेड खिलाड़ियों ने खारिज कर दिये थे फिर भी इसबार इन्हें ही दे दिया गया। इन एथलीटों का कहना है कि इस प्रकार के बेड पर नींद ठीक से नहीं आती जिससे प्रदर्शन प्रभावित होता है। टोक्यो ओलंपिक कोरोना महामारी के बीच खेला गया था। एथलीटों को एक-दूसरे के साथ अंतरंग होने से रोकने के लिए बेड बनाए गए थे। उस वक्त भी एथलीटों ने बिस्तरों को असुविधाजनक और कठोर बताया था। टोक्यो एथलीट विलेज के महाप्रबंधक ताकाशी किताजिमा ने 2020 में एक बयान में बताया था, आयोजन समिति रिसाइकिल करने योग्य वस्तुओं के बारे में सोच रही थी और बेड को लेकर एक आइडिया भी उसमें शामिल था। जीएम ने कहा कि बेड 200 किलोग्राम वजन उठा सकते हैं। इस वर्ष पेरिस ओलिंपिक के आयोजकों ने भी बेड फ्रेम डिजाइन को अपनाया पर इसके बाद भी खिलाड़ी इससे संतुष्ट नहीं हैं।

# पेरिस ओलंपिक : 50 मीटर 3 पोजीशन निशानेबाजी के फाइनल में पहुंचे स्वप्निल

**पेरिस।** भारतीय निशानेबाज स्वप्निल कुसाले पेरिस ओलंपिक की 50 मीटर 3 पोजीशन के फाइनल में पहुंच गये हैं। इस प्रकार भारत का एक और पदक पक्का हो गया है। स्वप्निल कुसाले ने नीलिंग राउंड में 198 अंक हासिल किए। उन्होंने क्वालिफिकेशन राउंड में 590 का स्कोर बनाया और सातवें स्थान पर रहे। क्वालिफिकेशन राउंड से शीर्ष आठ निशानेबाज फाइनल में पहुंचे।50 मीटर 3 पोजीशन शूटिंग में तीन (नीलिंग, प्रोन और स्टैंडिंग) से निशानेबाजी की जाती है और तीनों के कुल स्कोर के आधार पर फाइनलिस्ट और विजेता का फैसला किया जाता है। वहीं स्वप्निल के साथी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर को हालांकि निराशा का सामना करना पड़ा है। ऐश्वर्य दो राउंड (नीलिंग और प्रोन) तक फाइनल की रेस में रहने के बाद स्टैंडिंग शूट में गलती के कारण 8वें नंबर 11वें नंबर पर फिसल गये हैं। ऐश्वर्य ने फर्स्ट प्रोन सीरीज में 199 का स्कोर किया और वह 8वें नंबर पर हैं। वहीं स्वप्निल कुसाले फर्स्ट प्रोन सीरीज के बाद 11वें नंबर पर हैं। उन्होंने इस राउंड में 197 का स्कोर किया। ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने इससे पहले नीलिंग राउंड में 197 का स्कोर किया। भारत ने अब तक निशानेबाजी में को कांस्य पदक जीते हैं। मनु भाकर ने एक कांस्य व्यक्ति जबकि दूसरा मिश्रित इवेंट में सरबजोत सिंह के साथ जीता है।

# मुक्केबाज लवलीना पेरिस ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

**पेरिस।** भारत की लवलीना बोरगोहेन पेरिस ओलंपिक की मुक्केबाजी स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं। लवलीना ने 75 किलो भार वर्ग में नॉर्वे की मुक्केबाज सनीवा हाफ्सटेड को 5-0 से हरा दिया। लवलीना ने इस मुकाबले में पहले ही दौर से आक्रमण शुरु कर दिया। इस प्रकार इस भारतीय मुक्केबाज ने पहला राउंड 5-0 से जीता। इसके बाद दूसरे राउंड में भी अच्छा प्रदर्शन कर मुकाबला अपने नाम किया। लवलीना के सामने नॉर्वे की हाफ्सटेड टिक नहीं पायीं। भारतीय बॉक्सर ने पहले और दूसरे राउंड की तरह तीसरा राउंड भी जीत लिया। तीन मुक्केबाजों की हार के बाद बोरगोहेन की जीत से मुक्केबाजी दल को राहत मिली है। लवलीना ने टोक्यो ओलंपिक में भी कांस्य पदक जीता था। लवलीना ने 75 किलो वर्ग में आने के बाद 2022 में एशियन चैंपियन और 2023 में विश्व चैंपियन का खिताब जीता था।

# वर्ल्ड मास्टर्स टी20 लीग मं शामिल होंगी 6 टीमें

**जोहांसबर्ग।** यहां अगले माह अगस्त में होने वाली वर्ल्ड मास्टर्स टी20 लीग 2024 के लिए पूर्व क्रिकेटर जोंटी रोड्स को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया है। दक्षिण अफ्रीका के किंग्समीड स्टेडियम में होने वाली इस लीग में कुल 6 टीमें इंद्रप्रस्थ वॉरियर्स, गल्फ सुपरस्टार्स, सिडनी स्पार्टन्स, कोलंबो टाइटन्स, लाहौर लायंस और कैरेबियन पाइरेट्स शामिल होंगी। इसमें दक्षिण अफ्रीका , ऑस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, श्रीलंका और पाकिस्तान के अलावा भारतीय क्रिकेटर भी भाग लेंगे। वर्ल्ड मास्टर्स लीग का ब्रांड एंबेसडर बनने पर रोड्स ने खुशी जताते हुए कहा कि यह टूर्नामेंट दुनिया भर की बेहतरीन क्रिकेट प्रतिभाओं को एक मंच पर लाने का काम कर रहा है, ऐसे में इसका हिस्सा होना मेरे लिए बेहद सम्मान की बात है। साथ ही कहा कि बेहतरीन खिलाड़ियों से सजे इस टूर्नामेंट का प्रचार करने के लिए मैं पूरी तरह से तैयार हूं। रोड्स ने साल 1992 से 2003 तक दक्षिण अफ्रीका की तरफ से 52 टेस्ट और 245 एकदिवसीय मैच खेले हैं। टेस्ट में 35.66 और एकदिवसीय में उनके नाम 35.11 के बल्लेबाजी औसत के साथ ही 8,000 से अधिक रन हैं। रोड्स को ब्रांड एंबेसडर बनाने के बाद लीग के सीईओ राजीव मिश्रा ने कहा कि हमें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि रोड्स इस लीग के ब्रांड एंबेसडर होंगे। इस लीग में दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज बल्लेबाज हर्शल गिब्स भी नजर आयेंगे। लीग में भारत से पूर्व तेज गेंदबाज मुनाफ पटेल, पाकिस्तान के शोएब मलिक और श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर एंजेलो परेरा और धामिका प्रसाद भी उतरेंगे।

## व्यापार

# टाटा ने चीन की इस कंपनी को किया टाटा, जानिए क्या है मामले का अमेरिकन कनेक्शन

**नई दिल्ली।** देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने टाटा ग्रुप ने चीन के स्मार्टफोन ब्रांड वीवो के भारत में मैज्योरिटी हिस्सेदारी खरीदने की योजना ठंडी पड़ गई है। सूत्रों के मुताबिक अमेरिकी कंपनी ऐपल ने इस डील पर आपत्ति जताई थी। फाइनेंशियल वर्ष 2023 में वीवो की भारतीय यूनिट का रेवेन्यू तीस हजार करोड़ का था लेकिन कंपनी पर सरकार का दबाव है कि इसका कंट्रोल किसी भारतीय कंपनी के पास होना चाहिए। इस कारण वीवो अपनी भारतीय यूनिट में 51फीसदी हिस्सेदारी टाटा ग्रुप को बेचना चाहती थी लेकिन ऐपल इस डील से सहज नहीं थी क्योंकि टाटा ग्रुप उसके डिवाइस बना रहा है। सूत्रों ने कहा कि अमेरिकी कंपनी की आपत्ति के कारण टाटा ग्रुप की वीवो इंडिया में मैज्योरिटी हिस्सेदारी लेने की योजना विफल हो गई है। ऐपल के लिए टाटा ग्रुप एक प्रमुख मैन्युफैक्चरिंग पार्टनर है। ऐपल और वीवो आपस में एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी हैं। ऐसे में यह डील ऐपल कंपनी को पसंद नहीं आई। शायद इसी वजह से टाटा और वीवो के बीच डील नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा कि अब इस पर पुनर्विचार की संभावना कम है। ऐपल और वीवो ने उन्हें भेजे गए सवालों को जवाब नहीं दिया है। टाटा ग्रुप के प्रवक्ता ने कहा कि हम इससे इनकार कर रहे हैं। चीन की कंपनियां भारत में अपने व्यापार में कंट्रोलिंग स्टेक बेचकर स्थानीय भागीदारों को शामिल करने पर विचार कर रही हैं। इस फैसले से उनकी फंडिंग तक आसान पहुंच हो जाएगी। केंद्र सरकार भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देशों से आने वाले निवेश की कड़ी जांच कर रही है। इसके चीनी कंपनियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। साथ ही व्यापार में एक विश्वसनीय स्थानीय भागीदार होने से चीन की कंपनियों को सरकार की मेक इन इंडिया पहल में भरोसेमंद भागीदार के रूप में उभरने में मदद मिलेगी। चीन के एसएआईसी ग्रुप ने सज्जन जिंदल के जेएसडब्ल्यू ग्रुप को मैज्योरिटी स्टेक बेचने का फैसला किया है। इसी तरह सुनील वचानी के नेतृत्व वाली डिक्सन इलेक्ट्रॉनिक्स ने भी इस्मार्टू इंडिया में 56फीसदी हिस्सेदारी खरीदने का सौदा किया है। इस्मार्टू इंडिया चीन की कंपनी ट्रांसन टेक्नोलॉजी की सहायक कंपनी है। उसके पास आईटेल, इनफिनिक्स और टेक्नो जैसे ब्रांड हैं। टाटा ग्रुप इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में आक्रामक विस्तार कर रहा है। ग्रुप ने ऐपल के मैन्युफैक्चरिंग पार्टनर ताइवान की कंपनी विस्ट्रॉन के भारत में प्लांट्स का अधिग्रहण किया है। इससे टाटा ग्रुप को न केवल भारत में बिक्री के लिए बल्कि एक्सपोर्ट के लिए भी आईफोन बनाने का मौका मिला है।

# सोने और चांदी की कीमतों में सुधार

**नई दिल्ली।** घरेलू बाजार में बुधवार को सोने ओर चांदी की कीमतों में गिरावट के बाद सुधार आया है और कीमतें बढ़ने लगी हैं। सप्ताह के तीसरे कारोबारी दिन सोने व चांदी के वायदा भाव की शुरुआत बढ़त के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने के वायदा भाव 0.63 फीसदी बढ़कर 69,616 रुपए प्रति 10 ग्राम, जबकि चांदी का वायदा भाव 0.84 फीसदी की बढ़त के साथ ही 83,355 रुपए प्रति किलो पर कारोबार कर रहा था। वहीं गत दिवस कारोबार में सोना 68,610 रुपए और चांदी 82,659 रुपए पर बंद हुई थी। गत सप्ताह सोने-चांदी दोनों ही लगभग 4 से 5 हजार रुपए कम हुए थे पर इस सप्ताह के तीन दिनों में फिर से इनमें अच्छी बढ़त आ गई है। इसका कारण मांग बढ़ने के साथ ही दुनिया भर के बाजारों में मजबूती आना भी है। वहीं गत दिवस सोने का भाव 550 रुपए की तेजी के साथ 71,600 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 71,050 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। वहीं 99.5 फीसदी शुद्धता वाले सोने का भाव फिर से बढ़कर 71,250 रुपए प्रति दस ग्राम हो गया। इसका पिछला बंद भाव 70,700 रुपए प्रति 10 ग्राम था। कीमतों में तेजी की वजह से भारत में सोने की चमक फीकी पड़ती दिख रही है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल-जून तिमाही में सोने की मांग 149.7 टन रही जो पिछले साल की इसी अवधि के 158.1 टन के मुकाबले 5 फीसदी कम है। अप्रैल-जून 2024 में कीमतों के लिहाज से मांग 93,850 करोड़ रुपए रही जो पिछले साल की समान अवधि के 82,530 करोड़ रुपए की तुलना में 14 फीसदी अधिक है। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने में बढ़त बनी हुई है।

# बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का मार्केट कैप 5.5 ट्रिलियन डॉलर के पार

**मुंबई।** शेयर बाजार में तेजी का ट्रेंड जारी है। लार्जकैप से लेकर छोटे शेयर में भी खरीदारी जारी है। इस कारण बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का कुल मार्केट कैप 462 लाख करोड़ रुपए यानी 5.5 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा हो गया है। इससे पहले 24 मई, 2024 को भारतीय शेयर बाजार का पूंजीकरण पांच ट्रिलियन डॉलर को पार कर गया था। शेयर बाजार का पहली बार बाजार पूंजीकरण 28 मई, 2007 को एक ट्रिलियन डॉलर पार किया था। वहीं, अगले दस सालों बाद 10 जुलाई, 2017 को यह दो ट्रिलियन डॉलर और अगले चार सालों बाद 24 मई, 2021 को तीन ट्रिलियन डॉलर और फिर अगले दो सालों से ज्यादा समय के बाद को 30 नवंबर, 2023 को चार ट्रिलियन और अगले छह महीने में 24 मई, 2024 को पांच ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। दुनिया के शीर्ष पांच शेयर बाजारों में बाजार पूंजीकरण में 2024 की शुरुआत से अब तक 25 फीसदी से ज्यादा रिटर्न के साथ भारतीय शेयर बाजार का प्रदर्शन बेहतर रहा है। जबकि अमेरिकी शेयर बाजार ने 13.50 फीसदी, हांगकांग ने 4.15 फीसदी, जापान ने 4.02 फीसदी और चीन ने माइनस 13.61 फीसदी का रिटर्न दिया है। मौजूदा समय में अमेरिका 57.28 ट्रिलियन डॉलर के मार्केट कैप के साथ दुनिया का सबसे बड़ा शेयर बाजार है। दूसरे नंबर पर 8.24 ट्रिलियन डॉलर के साथ चीन, 6.49 ट्रिलियन डॉलर के साथ जापान और 5.51 ट्रिलियन डॉलर की मार्केट कैप के साथ भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा शेयर बाजार है। पांचवें स्थान पर हांगकांग का शेयर बाजार आता है, जिसका मार्केट कैप 4.92 ट्रिलियन डॉलर है। भारतीय शेयर बाजार में तेजी का कारण अर्थव्यवस्था का मजबूत होना है। 2023-24 में जीडीपी 8.2 फीसदी की दर से बढ़ी और आम बजट 2024-25 से पहले पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 में जीडीपी साता फीसदी की दर से बढ़ सकती है।

# 23 महीनों में ग्रैंड विटारा की 2 लाख यूनिट्स की बिक्री

## हाइब्रिड एसयूवी की सेल्स में जबरदस्त उछाल देखने को मिला

**नई दिल्ली।** मारुति सुजुकी कंपनी ने 23 महीनों के टाइम पीरियड में मिड साइज हाइब्रिड एसयूवी ग्रैंड विटारा कार की 2 लाख यूनिट्स की बिक्री कर ली है। कंपनी का दावा है कि मिड साइज सेगमेंट में ये सेल्स का आंकड़ा किसी कार के लिए सबसे तेज आंकड़ा रहा है। मारुति सुजुकी के मार्केटिंग और सेल्स के सीनियर एग्जीक्यूटिव ऑफिसर पार्थो बनर्जी ने इस मौके पर कहा कि एसयूवी सेगमेंट में ग्रैंड विटारा हमारे लिए बड़ा प्रोडक्ट रही है। उन्होंने आगे कहा कि हाइब्रिड सेगमेंट में ये कार लोगों की पहली पसंद रही है और यही वजह है कि इस कार की 2 लाख यूनिट्स बिक चुकी हैं। कंपनी ने लोगों फ्यूल एफिशिएंसी को ध्यान में रखते हुए इस कार को पेश किया था और इसके लॉन्च से लेकर अबतक कार की सेल्स हमेशा अच्छी रही है। कार में पेट्रोल इंजन के साथ इलेक्ट्रिक मोटर का सपोर्ट दिया गया है। जिससे माइलेज बढ़ाने में मदद मिलती है। ये मोटर लिथियम आयन बैटरी से चलता है। फीचर्स के लिहाज से भी मारुति ग्रैंड विटारा बेहद खास है। इसके स्टैंडर्ड वेरिएंट में 9-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, हेड्स अप डिस्प्ले, पैनारोमिक सनरूफ, वायरलेस स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस चार्जर, वेंटिलेटेड सीट्स, एंबिएंट लाइटिंग, 360 डिग्री कैमरा, अलॉय व्हील्स समते कई खूबियां हैं। कंपनी ने इसमें सेफ्टी का भी खास ध्यान रखा है। मारुति ग्रैंड विटारा की कीमत 10.70 लाख रुपये से शुरू होकर 19.90 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। कंपनी ने इसे सीएनजी में भी उपलब्ध किया है। सीएनजी वैरिएंट की कीमत 13.05 रुपये से शुरू होती है. बाजार में ग्रैंड विटारा का मुकाबला किआ सेल्टोस, हुंडई क्रेटा और टोयोटा हायराइडर जैसी एसयूवी से है। ये 6 एयरबैग के साथ आने वाली मारुति की पहली कार है। इसमें एबीएस के साथ ईबीडी, चाइल्ड लॉक, चाइल्ड सीट के लिए एंकर पॉइंट्स, ओवरस्पीड वार्निंग, स्पीड सेंसिंग डोर लॉक, एंटी थेफ्ट इंजन इम्मोबिलाइजर, मिडिल रियर थ्री-पॉइंट सीटबेल्ट, फ्लैशिंग इमरजेंसी ब्रेक लाइट, सेंट्रल लॉकिंग जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं।

# प्रभास की द राजा साब की पहली झलक आई सामने

## रोमांटिक अंदाज में दिखे प्रभास

प्रभास की अपकमिंग पैन इंडिया फिल्म द राजा साब से उनकी पहली झलक फिल्म मेकर्स ने रिलीज कर दी है. मारुति द्वारा निर्देशित, हॉरर रोमांटिक कॉमेडी 10 अप्रैल, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है. द राजा साब का 45 सेकंड का टीजर प्रभास के लीड कैरेक्टर की झलक दिखाता है. क्लिप में प्रभास को मोटरसाइकिल पर आते हुए दिखाया गया है, जो सूट, धूप का चश्मा और हाथों में फूलों का गुलदस्ता लिए हुए हैं. फिल्म की पहली झलक पर फैंस ने कई तरह के रिएक्शन दिए हैं. पीपल मीडिया फैक्ट्री द्वारा निर्मित इस फिल्म का म्यूजिक एसएस थमन ने दिया है. द राजा साब में प्रभास, मालविका मोहनन, निधि अग्रवाल और रिद्धि कुमार जैसे कलाकार लीड रोल में हैं. वरालक्ष्मी सरथकुमार, जीशु सेनगुप्ता और ब्रह्मानंदम भी कलाकारों में शामिल हैं. यह मास एंटरटेनर पांच भाषाओं में रिलीज होगी, जिसमें तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़ और हिंदी शामिल हैं. प्रभास फिलहाल अपनी फिल्म कल्कि 2898 एडी की सफलता को एंजॉय कर रहे हैं. जिसमें उनके साथ अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण और कमल हासन भी हैं. प्रभास की राजा साब 10 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है यह फिल्म एक हॉरर रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है जिसमें प्रभास अलग ही अंदाज में नजर आएंगे. प्रभास के अलावा फिल्म में मालविक मोहनन, निधि अग्रवाल, और ऋधि कुमार जैसे कलाकार खास रोल प्ले करने वाले हैं. इनके अलावा फिल्म में बॉलीवुड एक्टर संजय दत्त भी नजर आने वाले हैं.

# ब्लैक साड़ी में बला की खूबसूरत दिखीं मौनी रॉय

## कातिलाना अदाएं देख तेज हुईं फैंस की धड़कनें

एक्ट्रेस मौनी रॉय हमेशा अपने बोल्ड और स्टनिंग लुक्स के कारण सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटौरती रहती हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनके हर एक लुक की तारीफ करते हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट एथनिक लुक से एक बार फिर फैंस के बीच कहर बरपा दिया है। इन तस्वीरों में उनका कातिलाना अंदाज देखकर फैंस अपने होश खो बैठे हैं। टीवी से बॉलीवुड तक का सफर तय करने वाली अभिनेत्री मौनी रॉय आज किसी भी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने अपनी अदाकारी से लोगों को इस कदर दीवाना बनाया है कि लोग उनकी तारीफ करते नहीं थकते हैं। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट फोटोज इंस्टाग्राम पर साझा की हैं। इन तस्वीरों में उनका कातिलाना अवतार देखकर फैंस एक बार फिर से अपने होश खो बैठे हैं। मौनी रॉय ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान ब्लैक कलर की साड़ी पहनी हुई है, जिसमें वो बेहद ही स्टनिंग और हॉट नजर आ रही हैं। उनका कातिलाना अंदाज इंटरनेट पर तबाही मचा रहा है। बता दें एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो उनका लुक चंद ही मिनटों में वायरल होने लगता है। फैंस भी उनके हर एक लुक को काफी ज्यादा पसंद करते हैं। इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस मौनी रॉय इंडोर फोटोशूट करवाया है। एक्ट्रेस कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक पोज देते हुए फोटोज क्लिक करवा रही हैं। खुले बाल, माथे पर बिंदी और मिनिमल मेकअप कर के एक्ट्रेस मौनी रॉय ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। उनके इस लुक को देखकर फैंस दिलखोलकर लाइक्स और कॉमेंट्स कर रहे हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडिया लवर हैं और इंस्टाग्राम पर काफी एक्टिव भी रहती हैं। साथ ही अपने फैंस के साथ फोटोज और वीडियोज शेयर करती रहती हैं। फैंस भी अक्सर उनके स्टाइल को फॉलो करते हैं।

# बॉक्स ऑफिस पर धनुष की फिल्म रायन कर रही है ताबड़तोड़ बिजनेस,

## वीकेंड पर किया तगड़ा कलेक्शन

धनुष की फिल्म रायन सिनेमाघरों में दर्शकों का मनोरंजन कर रही है। इस फिल्म ने धनुष के लिए उनके करियर का एक खास रिकॉर्ड बना दिया है। रायन उनके करियर की ओपनिंग वीकेंड पर सबसे ज्यादा पैसे कमाने वाली फिल्म बन गई है। वहीं, वैश्विक स्तर पर भी फिल्म अच्छी कमाई कर रही है। सैकनिल्क के अनुसार, रायन ने पहले दिन 13.65 करोड़ का कलेक्शन किया था। दूसरे दिन इसने 13.75 करोड़ रुपये कमाए थे और सप्ताह के आखिरी दिन 15.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया। इस तरह फिल्म ने ओपनिंग वीकेंड पर कुल 42.65 करोड़ कमा लिए। वहीं, इसकी वर्ल्डवाइड कमाई की बात करें तो वो 70 करोड़ का आंकड़ा छू चुकी है। रायन धनुष के निर्देशन में बनी दूसरी फिल्म है। इससे पहले उन्होंने पा पंडी को डायरेक्ट किया था, जो 2017 में रिलीज हुई थी। रायन उनके करियर की 50वीं फिल्म है और ऐसे में इसकी सफलता को देखते हुए धनुष काफी खुश भी होंगे। इसकी कहानी को भी धनुष ने ही लिखा है।

# बॉक्स ऑफिस पर विक्की कौशल और तृप्ति डिमरी कि फिल्म बैड न्यूज ने सेकंड वीकेड पर भी मचाया धमाल

## 50 करोड़ का आंकड़ा किया पार

विक्की कौशल और तृप्ति डिमरी इन दिनों खूब सुर्खियों में हैं और इसकी वजह ये है कि इस जोड़ी की साथ में पहली फिल्म 'बैड न्यूज दर्शकों का दिल जीतने में कामयाब रही है. फिल्म रिलीज के पहले दिन से बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए हुए है. इसी के साथ इस फिल्म ने पहले ओपनिंग वीकेंड में तो दमदार कलेक्शन किया ही था वहीं दूसरे वीकेंड पर भी फिल्म ने टिकट काउंटर पर गर्दा उड़ा दिया है और खूब नोट कमा लिए हैं. चलिए यहां जानते हैं 'बैड न्यूज ने रिलीज के 10वें दिन कितना कलेक्शन किया है? 'बैड न्यूज बॉक्स ऑफिस पर छाई हुई है. ये फिल्म हेटेरोपैटरनल सुपरफेकुंडेशन के इर्द-गिर्द घूमती है. ये ऐसा प्रोसेस है जिसमें जुड़वां बच्चे एक ही मां से पैदा होते हैं, लेकिन बायोलॉजिकल पिता अलग-अलग होते हैं. दिलचस्प कॉन्सेप्ट से लेकर विक्की और तृप्ति की सिज़लिंग केमिस्ट्री और फुट-टैपिंग नंबर्स तक, बैड न्यूज़ ने इन सबको लेकर खूब सुर्खी बटोरी. जिसके चलते फिल्म की शुरुआत काफी अच्छी रही. इतना ही नहीं ये फिल्म विक्की कौशल के करियर की सबसे बड़ी ओपनर है. वहीं फिल्म ने ओपनिंग वीकेंड पर भी दमदार कमाई की थी. हालांकि पहले हफ्ते में फिल्म की कमाई में गिरावट भी आई लेकिन वीकेंड पर एक बार फिर 'बैड न्यूज संभल गई है और इसकी कारोबार में तेजी देखने को मिली है. फिल्म के कलेक्शन की बात करें तो 'बैड न्यूज ने 8.3 करोड़ से खाता खोला था. इसके बाद पहले हफ्ते में फिल्म की कमाई 42.85 करोड़ रुपये रही. वहीं दूसरे हफ्ते के दूसरे फ्राइडे फिल्म ने 2.15 करोड़ का कलेक्शन किया. दूसरे शनिवार 'बैड न्यूज के बिजनेस में 51.16 फीसदी की तेजी आई और इसने 3.25 करोड़ कमाए. वहीं अब फिल्म की रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे रविवार की

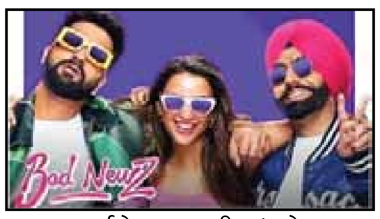


कमाई के शुरुआती आंकड़े आ गए हैं. सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक 'बैड न्यूज ने रिलीज के 10वें दिन 3.75 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ 'बैड न्यूज का 10 दिनों का कुल कलेक्शन अब 52.00 करोड़ रुपये हो गया है.'बैड न्यूज को बॉक्स ऑफिस पर हॉलीवुड फिल्म डेडपूल एंड वूल्वरीन के साथ ही धनुष स्टारर रायन से तगड़ा कंप्टीशन मिल रहा है. वहीं पिछले एक महीने से बॉक्स ऑफिस पर जमी हुई कल्कि 2898 भी पूरी चुनौती दे रही है. इन सबके बावजूद 'बैड न्यूज को भी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है जिसके चलते फिल्म ने रिलीज के 10 दिनों में हाफ सेंचुरी पूरी कर ली है यानी फिल्म ने 50 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. इसी के साथ ये फिल्म विक्की कौशल के करियर की 50 करोड़ क्लब में एंट्री करने वाली पांचवीं फिल्म बन गई है.

# अल्लू सिरीश स्टारर बडी की आकर्षक पोस्टर के साथ रिलीज डेट की हुई घोषणा, 2 अगस्त को रिलीज होगी फिल्म

बडी ने अपने आगमन की घोषणा की। बहुमुखी और करिश्माई अभिनेता अल्लू सिरीश अपनी आगामी फिल्म बडी के साथ दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने के लिए तैयार हैं, जो एक काल्पनिक एक्शन ड्रामा है जो एक दृश्य तमाशा और कल्पना से भरपूर कथा का वादा करता है। स्टूडियो ग्रीन फिल्म्स के प्रतिष्ठित बैनर तले केई ज्ञानवेल राजा और अधाना ज्ञानवेल राजा द्वारा निर्मित, यह फिल्म शीर्ष-स्तरीय उत्पादन मूल्यों का दावा करती है, जो उच्चतम गुणवत्ता का सिनेमाई अनुभव देने के लिए उत्पादन टीम की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। फिल्म के निर्माण में उत्कृष्टता की खोज में कोई कसर नहीं छोड़ी गई है, जिसमें हर फ्रेम में बारीकी पर सावधानीपूर्वक ध्यान दिया गया है। गायत्री भारद्वाज, एक प्रतिभाशाली अभिनेत्री, मुख्य महिला की भूमिका निभाती हैं, जो कहानी में गहराई और भावना जोड़ती है। सैम एंटोन द्वारा निर्देशित, जो अपनी अभिनव कहानी कहने के लिए जाने

जाते हैं, और नेहा ज्ञानवेल राजा द्वारा सह-निर्मित, बडी एक सहयोगात्मक प्रयास है जो उद्योग में सर्वश्रेष्ठ को एक साथ लाता है। बडी 2 अगस्त को एक भव्य रिलीज के लिए तैयार है, जिसके निर्माताओं ने रोमांचक खबर की घोषणा करने के लिए एक आकर्षक पोस्टर जारी किया है। फिल्म के सार को दर्शाने वाला यह पोस्टर प्रशंसकों और आलोचकों के बीच चर्चा का विषय बन गया है, जिससे आगामी रिलीज में रुचि बढ़ गई है। बडी के ट्रेलर ने पहले ही तहलका मचा दिया है, और दर्शकों को अपनी कल्पना, एक्शन और ड्रामा के मिश्रण से आकर्षित कर लिया है। इसे मिली जबरदस्त सकारात्मक प्रतिक्रिया इस बात का प्रमाण है कि फिल्म रोमांच और मनोरंजन करने की क्षमता रखती है। प्रतिभाशाली जोड़ी हिप हॉप तमीज़्हा द्वारा रचित साउंडट्रैक चार्ट-टॉपिंग सनसनी बन गया है, जिससे फिल्म की रिलीज़ के लिए उत्सुकता और बढ़ गई है। बडी का एक प्रमुख आकर्षण अल्लू सिरीश के साथ उनके साथी की एक्शन सीक्वेंस हैं, जो अभिनेता की बहुमुखी प्रतिभा और शारीरिक कौशल को प्रदर्शित करते हैं। एक्शन से भरपूर दृश्यों और एक सम्मोहक कहानी के संयोजन के साथ, बडी इस शैली के प्रशंसकों के लिए अवश्य देखने लायक फिल्म है। सफल लॉन्च सुनिश्चित करने के लिए, निर्माताओं ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, पारंपरिक मीडिया और प्रचार कार्यक्रमों का लाभ उठाते हुए एक रणनीतिक मार्केटिंग अभियान शुरू किया है। अभियान का उद्देश्य फिल्म की रिलीज से पहले गति बनाना, दर्शकों को जोड़ना और फिल्म के विषय और निर्माण के बारे में चर्चा करना है। फ़ैंटेसी, एक्शन और ड्रामा के बेहतरीन तत्व शामिल हैं।

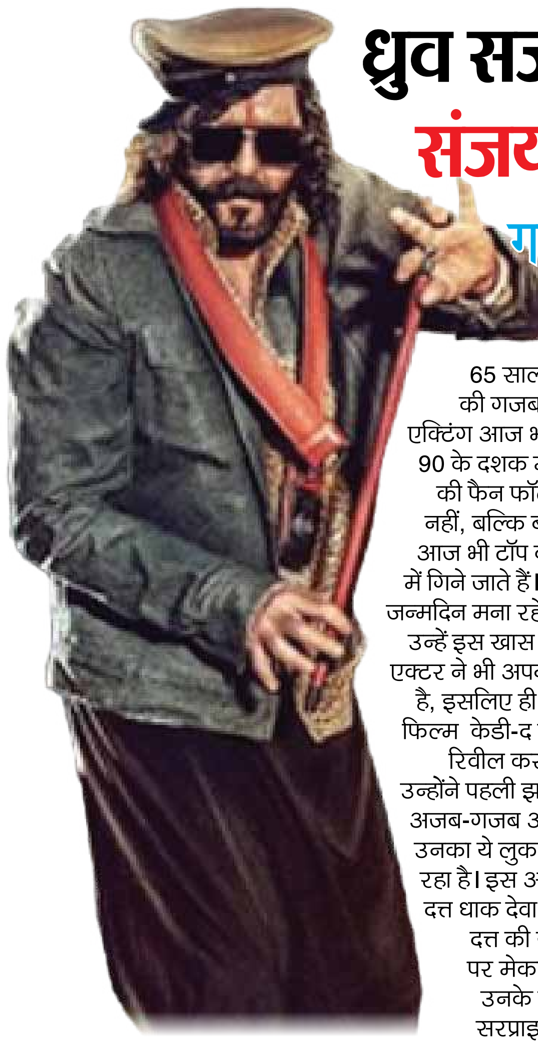

# ध्रुव सर्जा स्टारर केडी-द डेविल से संजय दत्त का फर्स्ट लुक आउट

## गले में बेल्ट, सिर पर टोपी अतरंगी अवतार में दिखें एक्टर

65 साल की उम्र में भी संजय दत्त की गजब फैन फॉलोइंग है। उनकी एक्टिंग आज भी उतनी दमदार है जितनी 90 के दशक में थी। इतना ही संजय दत्त की फैन फॉलोइंग समय के साथ घटी नहीं, बल्कि बढ़ी है। यही वजह है कि वो आज भी टॉप बॉलीवुड एक्टर्स की लिस्ट में गिने जाते हैं। आज एक्टर अपना 65वां जन्मदिन मना रहे हैं और उनके चाहने वाले उन्हें इस खास दिन की बधाइयां दे रहे हैं। एक्टर ने भी अपने फैंस का पूरा ध्यान रखा है, इसलिए ही उन्होंने अपनी अपकमिंग फिल्म केडी-द डेविल से अपना नया लुक रिवील कर दिया है। नए किरदार की उन्होंने पहली झलक दिखाई है, जिसमें वो अजब-गजब अवतार में नजर आ रहे हैं। उनका ये लुक लोगों को काफी पसंद आ रहा है। इस अपकमिंग फिल्म में संजय दत्त धाक देवा का रोल निभाएंगे। संजय दत्त की ये तस्वीर उनके जन्मदिन पर मेकर्स ने रिलीज की है और ये उनके चाहने वालों के लिए किसी सरप्राइज से कम नहीं है। जैसे ही अभिनेता संजय दत्त ध्रुवा सरजा की केडी-द डेविल की एपीक दुनिया में शामिल हुए, यह फिल्म उनके खास प्रोजेक्ट्स में गिनी जाने लगी। इस पर बात करते हुए केडी-द डेविल के निर्देशक प्रेम कहते हैं, फिल्म इंडस्ट्री में संजय दत्त की विशालता को कौन नहीं जानता? वह कई प्रभावशाली भूमिकाओं के साथ आते हैं। उनका मुन्ना भाई आज भी बहुत सराहा जाता है, मैं बहुत आभारी और खुश हूं कि उन्होंने इस फिल्म को करने के लिए हां कहा और उनके साथ काम करना खुशी की बात रही। सामने आए संजय दत्त के लुक पर आप अगर नजर डालेंगे तो एक्टर गले में बेल्ट, सिर पर टोपी और हाथ में छड़ी लिए दिख रहे हैं। इन्हें देख कर जाहिर हो रहा है कि वो एक पुलिस वाले की भूमिका में हैं, लेकिन ये पुलिस वाला कैसे होगा इसका अंदाजा लगा पाना जरा भी आसान नहीं है। सामने आई झलक में उनके बड़े बाल, दाढ़ी और माथे पर तिलक भी देखने को मिल रहा है। इसके साथ बी उन्होंने लेपर्ड प्रिंट वाली शर्ट के ऊपर डेनिम जैकेट कैरी की है। साथ वो लूट फिट पैंट और हाई हील वाले बूट पहने दिख रहे हैं।

# खाने की शौकीन हैं वैशाली अरोड़ा, एक्ट्रेस ने उड़ने की आशा के सेट की बताई मजेदार बातें

टीवी एक्ट्रेस वैशाली अरोड़ा इन दिनों शो उड़ने की आशा को लेकर सुर्खियों में हैं। इसमें वह रिया का किरदार निभा रही हैं, जिसे दर्शक काफी पसंद कर रहे हैं। एक्ट्रेस फूडी हैं और वह सेट पर कुछ न कुछ खाते रहना पसंद करती हैं। वैशाली ने कहा, मैं एक मजेदार बात शेयर करना चाहती हूं जो कई बार हुआ है। मेरा किरदार रिया खाने की बड़ी शौकीन है। आकाश खाना बनाकर उसे भेजता है और वह उसे खाती है। जब भी मैं शूटिंग कर रही होती हूं, प्रोडक्शन टीम पूछती है कि मैं क्या खाना चाहती हूं और उसे तैयार करके रखती है। मैं अपने किरदार को रियल में जीने लगती हूं, क्योंकि मैं खुद भी फूडी हूं, यहां तक कि रिहर्सल के दौरान भी मैं कुछ न कुछ खाती रहती हूं। उन्होंने कहा, जब तक हम फाइनल टेक लेते हैं, तब तक खाना लगभग खत्म हो चुका होता है और मेरे पेट में खाने के लिए जगह नहीं बचती। उदाहरण के लिए... आकाश ने रिया के लिए रेड वेलवेट केक बनाया। मैंने रिहर्सल के दौरान खाना शुरू किया और फाइनल टेक तक आधा खा लिया था। इसी तरह, डोसा मैंने रिहर्सल के दौरान इतना खाया कि मैं बाद में लंच नहीं कर सकी। मानसून में वैशाली को मैगी और चाय बेहद पसंद है। उन्होंने कहा, मुझे मानसून का मौसम ज्यादा पसंद नहीं है, लेकिन इस मौसम में मेरी पसंदीदा चीज घर पर बैठकर चाय और मैगी है। इस दौरान कुछ मजेदार देखना और अपने सोफे पर आराम करना है। काम करते समय, मैं एक्टिव रहने के लिए कॉफी पीती रहती हूं और बारिश बंद होने पर ताजी हवा लेने के लिए बाहर टहलती हूं। मानसून रोमांटिक सीन्स के बारे में वैशाली ने कहा, हां, मानसून रोमांस का सीजन है। कुछ ऐसी चीज है जिसका आने वाले एपिसोड में दर्शकों को इंतजार करना चाहिए। आकाश और रिया के बीच की केमिस्ट्री वाकई बहुत रोमांटिक तरीके से सामने आएगी। उन्होंने कहा, बारिश रिया को दिल की बात कहने के लिए मजबूर करेगी, और आकाश का रिएक्शन देखने लायक होगा।